परंतु वह नहीं चढ़ता तब लार्ड वेलिन्गटन ने उस अफसर से कहा कि "भाई तनिक तुम भी इसमें हाथ लगा दो तो चढ़ जाय" अफ़सर ने जो उन्हें पहचानता न था कि यह सब फ़ौजों के कमांडर इन्चीफ़ हैं, कहा वाह साहिब! मैं तो अफ़सर हूं मेरा यह काम नहीं है" तब लार्ड साहिब ने जिन को कि वह कोई राह जण्टिलमेन समझे था, तुरन्त घोड़े पर से उतर कर उस लट्ठे पर सिपाहियों के साथ हाथ लगाकर जोर मारा तब वह चढ़ गया चलते समय लार्ड साहब उसका घमंड तोड़ने के लिये कहा, "हे अफ़सर साहिब जब कभी फिर कोई ऐसा काम आ पड़े तो आप कृपा करके अपने कमांडर इन्चीफ़ को बुला-भेजियेगा और मैं फिर हाज़िर हो जाऊंगा" यह कह कर वह घोड़ा उड़ा कर चल दिये, वह अफ़सर इतने बड़े उच्च पद के मनुष्य का ऐसा साधारण और नम्र स्वभाव देख कर महालज्जित हुआ० और जब सब सिपाहियों को मालूम हुआ कि वह सुजन जो हमारे संग लट्ठ उठाया है स्वयं कमांडर इन्चीफ़ साहिब थे तो सबको उनका ऐसा नम्र और सरल स्वभाव देख कर महा आश्चर्य हुआ॥

४५—एक मर्तबे का जिक्र है कि हाकिम सोलन खामोश बैठा था। एक मसखरेने कहा कि आप के चुप चाप बैठने की यही वजह है कि आप बेवकूफ़ हैं और बोलने का मजर नहीं रखते। सोलनने जवाब दिया कि दुनया में कभी ऐसा बेवकूफ़ हुआ ही नहीं जो चुप रह सके।

४६—एक किसी मनुष्य की लड़की काल वशात् मरगई।

एक दिन जबकि वह अपने घरपर नहीं था कहीं गया हु-आ था एक दरिद्र भिक्षा की लालसा से कहीं को बड़ी शीघ्रता से दौड़ता हुआ जाता था। मार्ग भूल कर उस के प्राङ्गण में जा बैठा कि इतने में चौकीदार ने उसको पकड़ लिया और मारने को उद्यत था कि भीतर से मृत लड़की की मां की दृष्टि उसपर पड़ी तो उसने दयायुत होकर चौकी-दार को उसे मारने से बरजा और उस भिक्षुक को समक्ष बुला कर कहा कि तू कौन है ? और क्यों इस प्रकार घब-राता हुआ मेरे गृहाङ्गण में चला गया। भिक्षुक ने अपने तईं तिरस्कार से बचाने के निमित्त उस से कहा कि मैं ईश्वर के यहां से आया हूं यह मर्त्यलोक मेरा देखा नहीं था मुझे शीघ्र लौटना था इस कारण दौड़ता जाता था कि मार्ग भूलगया। कुछ स्वेच्छा से यह बात मुझ से नहीं हुई। मेरा अपराध क्षमा करना यह बात सुन कर वह स्त्री और भी करुणावर्त्त हुई। और उस से फिर पूछा कि क्या तुम स-च कहते हो ? उसने अपने उत्तर को सत्य ठहराने के नि-मित्त बड़ी २ शपथ खाईं। और यह कहा कि अब मुझे जानेदो बहुत बिलंब होता है। उस स्त्री ने कहा यदि तुम सचमुच ईश्वर के यहां से आये हो तो तुम जान ते हो कि मेरी लड़की कि जिसका नाम प्रिया था और जिसे मरे एक वर्ष का अन्तर होता है कहां होगी। भिक्षुक को इस और यह भली भांति निश्चय होगया कि उसके बचनों पर उस स्त्री को पूरा विश्वास होगया है तो झट उसने उत्तर दिया कि हां ! मैंने अवश्य प्रिया को ईश्वर के यहां देखा।

था बड़ी दुखी होरही है । और तुम्हारा नाम ले ले के रोती है । यह बात सुनतेही वह स्त्री आंसू भर लाई और रोदन करने लगी उस भिक्षुक के चरणों पर गिर पड़ी और उस से कहने लगी कि मेरे भाग्य से तुम यहां आपड़े हो । नहीं तो प्रिया की गति मुझे कहां से बिदित होनीथी । अब कृपा करो चणेक ठहरो प्रिया के लिये मैं कुछ खाने पीने और पहिरने का समान एकत्र करदूं तुम उसे लेवा लेजाओ और उस दुखिया को देदेना । भिक्षुक ने देखा कि मेरो बन पड़ी है कहने लगा मुझे आज्ञा नहीं है कि मैं कुछ यहां से ले जाऊं । ईश्वर की ड्योढ़ी में बड़े २ वीर द्वारपाल हैं वे बिना शरीरान्वेषण 'तलाशी' लिये भीतर जाने नहीं देते । कहीं मेरे पास कुछ देख पावेंगे तो न जाने क्या कर डालेंगे । उस स्त्री ने उस के पैर पकड़ लिये कहा महाराज जैसे बने थोड़ा बहुत अवश्य लेजाओ मैं तुम्हारी कृपा को कभी न भूलूंगी । जब बहुत प्रकार से बिनती कर चुकी तो उस भिक्षुक ने कहा अच्छा और लत्ता कपड़ा कुछ नहीं लेजाऊंगा यदि द्रव्य देती हो तो उसे छिपाय के किसी न किसी भांति प्रिया के पास पहुंचाय दूंगा परन्तु बिलम्ब न करो, मैं अब बहुत ठहर नहीं सकता । उस स्त्री ने कहा केवल द्रव्य से प्रिया क्या करेगी । उस भिक्षुक ने उत्तर दिया कि ईश्वर की नगरी में बड़ी बड़ी दूकाने हैं वहां सब कुछ मिल सकता है यहां से भेजने की कुछ आवश्यकता नहीं केवल द्रव्य पास चाहिए । सारांश यह कि वह स्त्री झट भीतर गई कुछ स्वर्ण मुद्रा निकाल लाई और फिर

पड़ोसियों के पास गई और उन से ऋण लेकर ५००) मुद्रा पर्य्यन्त एक पोटरी में बांध कर उस भिक्षुक को दिये और उस से हाथ जोड़ यह जिज्ञासा किया कि कुछ भोजन कर जावे। भिक्षुक के हाथ रुपयों की थैली जो हाथ लग गई थी उसे यह चिन्ता होरही थी कि कदाचित् उस स्त्री का स्वामी न आ जाय और उस पर उलटी आपत्ति न पड़े। तस्मात् उसने कहा मुझे अब भोजन का सावकाश नहीं केवल तुमारे आग्रह से इतनी देर ठहरा हूं नहीं तो अब तक पहुंचा होता। जब स्त्री ने उसको एक न मानी तब वह चुपका हो रहा परन्तु उस ने यह कहा कि शीघ्र भोजन दे दो कि मैं चला जाऊं। उस स्त्री ने तुरत खीर पकवा उसे खिलाई और बहुत कुछ कह सुन कर उसे विदा किया कि वह कुछ दूर पहूंचा होगा कि इतने में उस स्त्री का पति कहीं से घोड़े पर सवार होकर घर आन पहुंचा मुहल्ले वालों से मार्ग में उसको भेंट हुई उन्हीं ने कहा कि तुम्हारी स्त्री आज हम से इतना द्रव्य ले गई है सोक्यों ले गई होगी? उसने कहा मैं नहीं जानता पूछ करने से ज्ञात होगा। घर आतेही उसने अपनी भार्य्या से पूछा उसने सब वृत्तान्त कह सुनाया तब उस को उस भिक्षुक का भटियापन विदित हुआ उसने कहा अरी मूर्ख तुझे वह ठग गया है। तूने यह क्या अनर्थ किया? वह भोली भाली बोली नहीं! वह तो मच ईश्वर के ही यहां का था उसने प्रिया का सब वृत्तान्त मुझसे कहा है !. वह किसी प्रकार वंचक नहीं था। जब उसके पति ने पूछा कि वह किस ओर

गया है, तो तत्काल रोने लगी और उसका अंगरखा पकड़ लिया पैरों पर गिर पड़ी कहने लगी कि उससे क्या प्रयोजन है। वह पहुंच गया होगा अपने स्थान पर, उसे मत छेड़ो कहीं ईश्वर के यहां जा कर प्रिया को सतावेगा। तुम तो फिर भी बहुत द्रव्य एकत्र करलोगे प्रिया बिचारी को कहां मिलेगा॰ ऐसा अच्छा अवसर हमको कभी नहीं मिलेगा। जब स्वामी ने देखा कि स्त्री उसको उस भिक्षुक का पता न बतलावेगी तो उसने चौकीदार से पूछा उसने कहा अभी सिटपिटाता हुआ इसी सामने की गली से हो कर गया है तब तो उसने उसके पीछे घोड़ा छोड़ा कि तत्काल में उसे दौड़ता हुआ उसने देख लिया कि मारे भय के प्रस्वेद से तर होरहा है और दौड़ता और पीछे पीछे देखता जाता है निदान जब वह उसके बहुत ही समीप पहुंच गया और भिक्षुक ने देखा कि अब किसी प्रकार वह बच नहीं सकता और किया कराया सब धंधा उसका व्यर्थ जाता है तो उस के सामने ही एक बड़ा वृक्ष था उस पर चढ़ना प्रारम्भ किया कि सवार के आने तक बहुत ऊंचा चढ़ गया॰ अब वह सवार वहां जाकर पहिले तो उसे धमकाने लगा कि पापी तू मेरी स्त्री को ठग लाया कहां जाता है? अब मेरे हाथ से नहीं बचैगा सरकार जो तुझे दण्ड देगी सो अलग रहा, उसने कुछ उत्तर नहीं दिया। जब सवार ने देखा की अब धमकी से काम नहीं निकलता तो उसकी स्तुति करने लगा और हाथ जोड़ कर बोला महाराज! तुम वास्तव में स्वर्ग वासी हो। तुम्हारे कर्म अति

श्लाध्य हैं। तुम धन्य हो,तुम्हारी कला अपार है। तुम्हारे समान निर्लोभ निष्कपटी और परोपकारी कोई नहीं मुझे तुम्हारा बड़ा भरोसा है। मैं तुम्हारा अति बाधित हूं कि तुमने मेरी पुत्री प्रिया की जनश्रुति मेरे घर में सुनाई। अब मेरे ऊपर एक कृपा करो जो द्रव्य तुम मेरी स्त्री से प्रिया के निमित्त लाये हो सो मेरी इच्छा अब उसको भेजने की नहीं है क्योंकि वह बाल्यावस्था ही में मुझे छोड़ गई और कुछ सम्बन्ध नहीं। तुमको बहुत कष्ट हुआ कि यहां तक तुम्हें इतनी बड़ी थैली का भार उठाना पड़ा अब इस कष्ट के पलटे कुछ दक्षिणा मुझसे ले लो और यह मेरी थैली मुझे देदो मैं तुम्हारी दयालुता को कभी नहीं भूलूंगा और तुमारे सुकर्म को कभी विस्मरण नहीं करूंगा इतनी बात सुन कर ऊपर से भिक्षुक क्या उत्तर देता है? भाई हमें तो यह थैली प्रिया को ही देनी है हम तुम को नहीं दे सकते। आज एक मंजिल पर हम पहुंच गये हैं कल को दूसरी मंजिल ते करेंगे और परसों तीसरी एवम् सात वारों में एक वार ईश्वर के यहां पहुंचही जायंगे। जब सवार ने देखा कि अब किसी भांति थैली हाथ नहीं लगती तो घोड़े की लगाम को उस वृक्ष की एक शाखा में बांध आप भी पेड़ पर चढ़ना प्रारम्भ किया जब भिक्षुक ने देखा कि अब कोई मार्ग भागने का नहीं है उसने भी दूसरी ओर से उतरना आरम्भ किया निदान यह कि झट घोड़े पर आरूढ़ हो कूंच कर कर गया तब तो प्रिया के पिता निराश हो पुकार उठे भाई यह

थोड़ा भी हमारी ओर से प्रिया को दे देना भूलना मत ॥

४७—एक मनुष्य बड़ा नटखट स्त्रियों के छल बल सुन के अपनी स्त्री को ऐसा ताके रहता कि परोसी की स्त्रियां या किसी बुढ़िया को दाई तक भी उसके पास न आने देता पर यह न समझता कि न सब स्त्रियां एकसी होती हैं न सब पुरुष एकसे होते हैं जैसे एक हाथ की पांचो उंगली एकसी नहीं होती निदान वह मूर्ख उसके पास सदा बैठा रहता जो कभी किसी आवश्यक काम के लिये जाता तो घर के दरवाजे के बाहर से ताला लगा जाता एक दिन घर के बाहिरी दरवाजे में ताला लगा के कुछ आवश्यक काम के लिये आगया इतने में एक चने बेचनेवाला उस गली में आ पुकारा उस को स्त्री ने चने वाले की पुकार सुन दरवाजे के पास आ थोड़ी सी कौड़ियां एक २ कर के किवाड़ की दरार से बाहिर निकाल दी और कहा कि इन कौड़ियों के चने तोल के इसी दरार की राह से भीतर डाल दे जब उसने उसी दरार की राह से चने फेंक दिये तब वह उठा ली गई इतने में उसका खाविंद दरवाजे पर आ पहुंचा चने वाले को देख किवाड़ खोल अन्दर जाके बड़ा क्रोध कर के बोला कि अरी अभागी भले मानसों की स्त्रियां कहीं ऐसे दरवाजे पर आके कोई वस्तु मोल लेती हैं यह सुन वह स्त्री कहने लगी कि अरे मूर्ख तू वृथा क्रोध करता है कोई भी अपनी स्त्री को ऐसे कैद में रखता है जो कोई बुढ़िया भी घर में रहती तो कोई घर का काम न अटक रहता और घर की बस्ती दूनी देख पड़ती यह सुन वह बोला कि

मुझे स्त्रियों का विश्वास नहीं जब चाहै तब एक नया छल बना के खड़ा कर दें यह सुन वह यों कहने लगी कि अरे महामूढ़ तू यह बातें वृथा करता है जो स्त्रियां छली हैं वे अपने खाविन्द के सिर पै धड़ाधड़ कराती हैं और कुछ बस नहीं चलता अपनी तो वह दशा है कि कर तो डर न कर तो डर शेर खाय तो मुंह लाल न खाय तो मुंह लाल यह बातें सुन वह कहने लगा कि वे और ही नामर्द होते हैं जिन की स्त्रियां छिपे २ खरची जाती हैं चतुर लोगों की स्त्रियों की क्या सामर्थ्य कि किसी से आंख मिला सकें यह बचन सुन वह परम चतुर चुप हो रही पर मन में कहने लगी कि देखो तो भंडुये यह तेरी चतुराई और चौकसी कैसी तेरे सिर पर डालती हूं कई दिन बीते वह स्त्री कलेजे की पीर का बहाना कर लोटने लगी उस के खाविन्द ने बहुतेरे बड़े २ नामी वैद्यों को दिखाया पर किसी ने उस का भेद न पाया एक चतुर वैद्य ने कहा कि इसकी औषधि धनवंतर से भी न हो सकेगी न जानिये इसे कौनसा रोग हुआ है निदान जब उसका खाविन्द अपने बस भर सब का हों की औषधि कर चुका तब निरास और उदास हो यह कहने लगा कि नेह के रोग के वैद्य की दुकान कहां है प्यारी की औषधि का क्या नाम है खाविन्द की यह बातें सुन के कहने लगी कि तुमने मेरे रोग दूर करने के लिये बहुतेरे उपाय किये पर कोई कुछ गुण न किया जो कुछ [illegible]ा सो हुआ अब एक काम और करो कि किसी दाई को बुलाके दिखला देखो क्योंकि स्त्रियों की औषधी स्त्रियों ही

से बन पड़ती है यह सुन वह कहने लगा कि प्यारी तेरे
रोग दूर करने के लिये मुझे सब कुछ अङ्गीकार है निदान
वह बुद्धिहीन एक बुढ़िया संसार को नटखट छली को अप
ने घर बुला लाया उस दाई ने एक२ कल से उसे देखा तो
कोई कल बेकली को न पाई तब यह अचंभा देख उस बी-
मार मक्कारा से बोली कि तूने छल कर के इस बिचारे को
क्यों दुख दे रक्खा है यह बात उस दाई के मुंहसे सुन कह
ने लगी कि अरी गुरू गंभीर दाई इस मेरे छल का यह
कारण है कि इस अभागी को मेरा कुछ विश्वास नहीं यद्य
पि मैंने उसके बिना आज तक किसी पुरुष का मुंह नहीं
देखा पर इसने मेरे सामने एक बड़ा बोल बोला है उसका
फल इसे दिखाना चाहती हूं इस में कुछ क्यों न हो यह
सुन दाई बोली कि यह कितनी बड़ी बात है इसमें मैं तेरी
साथी हूं निदान उसके पास से उठ उसके खाविन्द के पास
आके कहने लगी कि तूने ऐसी चंद मुखी सुंदर कान्ता को
भुला डाला यह सुन वह बोला कि अब मुझ से कुछ नहीं
बन पड़ता वही देखता हूं जो भाग्य दिखलाता है दाई
बोली कि तुम वृथा इतना सोच करते हो परमेश्वर की कृपा
से मैं इसे एक दिन में अच्छा किये देती हूं यह सुन वह
बोला कि इसे क्या भला है भलाई और पूछ २ उसको आ-
राम होने के लिये धन तो क्या वस्तु है जो प्राण भी काम
आवे तो मैं निछावर कर डालों यह सुन बुढ़िया बोली कि
जहां तूने इतने रुपये खर्च किये तहां पांच सौ रुपये और
खर्च कर जो तेरी प्राण प्यारी एक दिन में चंगी अच्छी

हो जावे तो तरवार से मेरा गला काट डालना मेरी बेटी की ऐसी हो दसा हो गई थी भाग्य बस अनायास एक महात्मा आ निकले मुझे अति दीन दुखी देख दया कर पांच सौ रुपये लगा के ऐसा एक टोटका बनादिया कि एक हो दिन में मेरी बेटी भली चंगी हो गई उस टोटके को मेरा बेटा प्राण समान रखता है जो तू पांच सौ रुपये खर्च करे तो रात भर के लिये बेटे की चोरी से उसे मैं तेरे घर ले आऊं और तेरी जोरू को अच्छा कर फिर वहीं पहुंचा दूं पर यह बात किसी को प्रगट न हो क्योंकि मेरे बेटे का स्वभाव बड़ा बुरा है जो कहीं जाने पावेगा तो मुझे जीता न छोड़ेगा यह बात सुन वह बुद्धिहीन बुढ़िया के पैरों पर सिर रख के कहने लगा कि तू मेरे प्राण बचाये देती है मैं अपने जीते जी तुझ से उरिन न हूंगा तब वह बड़ी नटखट बुढ़िया बोली कि एक शर्त है कि उस टोटके को तुही अपने सिर पर ला और तूही फिर पहुंचा दे निदान जो २ बुढ़िया ने कहा सो २ उसने सब मान लिया क्योंकि मरता क्या न करता निदान वह मक्कारा उस उल्लू को जाल में फांस अपने घर आई और एक अच्छे से खिंगी जवान को बुलवा के उससे कहने लगी कि तेरे मजे उड़ाने के लिये मैं एक सोने की चिड़िया लाई हूं पर एक मटके में बैठ के तुझे चलना पड़ेगा यह सुन वह जवान मस्तान ताव ठीक मूछों पर ताव दे के बोला कि मटका तो क्या जो छोटे से छोटे में बंद करके ले चलोगी तोभी चलेंगे और जो कहनी न होगी तो सिर तोड़ेंगे मुंह न मोड़ेंगे वह बुढ़िया उस जवान को अपने घर में बिठा के उस उल्लू के पास

[illegible] तब उस [illegible]
लाके उस मस्तान जवान को छिपे २ मटके में बिठा बोली
कि लो मियां साहब यह टोटके का मटका है इसे अपने
सिर पर रख के धीरे २ ले चलो वह काठ का उल्लू मटके
को सिर पर चढ़ा कर अपने घर लाया यह न समझा कि
इसमें सिर झुकाने की बात है निदान बुढ़िया ने उसकी
जोरू को अच्छे साफ सुथरे कपड़े पिन्हा शृंगार कर अतर
लगा पान खिला हार पान रक्खा चाकी और बहुतसी अ-
गर कापूर की बत्तीयां जलादी और घर वाले से बोली कि
तुम इस कोठरी में मत जाना उस में प्राणों का बड़ा खटका
है वह बिन सींग पूंछ का पशु कोठरी के दरवाजे पलंग पर
तोशक बिछा सिरहाने तकिया लगा पैर फैला सो रहा उ-
धर वह छिपा मस्तान जवान मटके से निकल काम देव का
पलिता निकाल उस की जोरू के छिपे हुए दीपक में जला
सारी रात जलाता रहा था भोर होते २ वह पलीता ठंढा
होगया और वह स्त्री भली चंगी उठ बैठी और वह मस्तान
जवान मटके में जा छिपा तब बुढ़िया बोली कि मियां सा-
हब जागो अपनी जोरू को देखो उसने जो देखा तो वह
अच्छी भली चंगी बैठी है यह देख दौड़ के बुढ़िया के पैरों
पर गिर पड़ा बुढ़िया बोली कि अभी थोड़ी रात और अं-
धेरा है इस मटके को मेरे घर पहुंचा दो जो उजियाला हो
जायगा तो मेरे और तुम्हारे दोनो के लिये बदनामी होगी
निदान वह अज्ञान जवान बैल समान मटका सिरपर रख
बुढ़िया के घर ले चला दैव योग से एक हलवाई
दुकान के नीचे कराही धो रहा था उसने

मनुष्य अच्छे सुथरे कपड़े पहिने मटका सिर धरे आता है उस देखने लगा तब वह निर बुद्धि भी हलवाई के पास आपहुंचा उसे देख लाज के मारे आंखें फेर ली और कराहो के धोने से उस जगह कीचड़ हो रही थी उस में जो उस उल्लू का पैर फिसला तो मुंह भड़ागिरा और मटका फूट गया उस के भीतर से मस्तान जवान निकल झाड़ पोंछ जूते हाथ में ले उस उल्लू का गला पकड़ कहने लगा कि अरे भडुवे मसखरे तू भले मानसों पर मटका पटकता है परमेश्वर ने कुशल की जो कोई ठिकरा मेरी आंखों नाक में लग जाता तो तेरा सिर मारे जूतियों के गंजा कर डालता इधर तो मस्तान जवान उसकी दुर्दसा कर रहा था उधर बुढ़िया हाथ पकड़े कह रही थी कि बलालूं तुमने मुझे बड़े संकट में डाला यह मटका हीरे पन्ने के दामों से भी भारी मोलका था मेरा बेटा मुझे छूने न देता और कहता जो तू इस मटके में हाथ लगावेगा तो तेरी टांगे चीर डालूंगा यह मेरी क्या दुरदसा करेगा वह काठ का उल्लू दोनों ओर से चौकन्ना था निदान मस्तान जवान से हाथ जोड़ पैरों पर गिर बिनती कर और बुढ़िया से कुछ रुपये देकर छूटा परन्तु जोरू के आराम होने के आनंद में इस नुकशान और बेहरमती को कुछ मन में न लाया और हलवाई कहता कि ऐसा चरित्र कभी नहीं देखा था जो आज देखा यह विना किसी कारण नहीं स्त्रियों के ऐसे चरित्र होते हैं परमेश्वर उन से बचावे जैसे कहा है कि " तिरिया [illegible] न जाने कोय, खसम मार के सत्ती होय " ।

[illegible] अमीर बेव: आईने में अपना चेहरा देख

कर कहने लगी "मुझे [illegible] भी
छिपा लेवेगा" ॥

४८—एक मनुष्य ने अपने मित्र के गुण प्रशंसन "मि·फ्रारिश" में एक स्थान पर कहा कि वह अपने शुद्धाचरण में बहुत अच्छा है, उसने उत्तर दिया, 'हां बहुत अच्छा है' उसका सञ्चलन उसके व्यवहार ही से स्पष्ट है ॥

५०—एक पत्र के सम्पादक पूछते हैं कि सर्कार ने लोगों को शस्त्र न रखने का निषेद किया गया है, तो क्या यह नियम उन जर्राहों के लिये भी है कि जो अपने जेब में घातुक औषधियां रखते हैं ॥

५१—एक शख़्स जिसने अपनी बीबी के मर जाने के बाद दूसरी शादी कर ली थी अकसर आपनी नई जोरू के सामने अपनी पहली बीबी की बड़ाई किया करता। एक रोज़ उस औरत ने झुंझला कर जवाब दिया आप सच कहते हैं लेकिन यक़ीन मानिये कि उस नेकबख़्त के मरने से जो मुसीबत मुझ पर आई है वह किसी पर न होगी।

५२—एक अंग्रेज़ का अल्पवयष्क बालक परम चतुर और प्रत्युत्तर था, उस के पिता का एक मित्र उसकी तीव्र बुद्धि की परीक्षा लेने के कारण प्रायः उससे छेड़ छाड़ किया करता। यहां तक छेड़ता था कि बालक चिढ़ जाता था। एक दिवस उस मनुष्य ने इस बालक से कहा कि, तुम कुछ आदमी नहीं मैं अब तुम्हें प्यार न करूंगा। तो लड़का कहता क्या है कि तुम्हें मुझ को अवश्य प्यार करना चाहिए उसने कहा क्यों लड़के ने उत्तर दिया इस कारण से कि मैं तुम से घृणा करता हूं और धर्म पुस्तक·

बाइबिल में लिखा है कि प्यार करो उनको जो तुम से घृणा रखते हों।

५३—एक मनुष्य कहीं दूर से होकर घर को आया। उस समय मारे प्यास के व्याकुल हो रहा था। आते ही पानी मांगा गिलास आया पानी पिया, संयोग वश गिलास में कहीं किसी ने रेशम की पिण्डी रख दी थी। पानी पीने में मुंह में चली गई और तालू में जा लगी निकालने लगे तो उस का एक छोर हाथ आ गया। खींचा तो कई गज़ रेशम हाथ में उछल गया तब तो वह मनुष्य उसे नसें समझ कर बहुत व्यग्र हुआ और मारे भय के ओठों को दबा कर चीख मारी। बीबी बीबी। दौड़ियो मैं सारा खुला जाता हूं॥

५४—एक रोमन सवार अश्व (बछेड़े) पर आरूढ़ हो चला जाता था कि एक ठठोल ने पूछा कि आप में और आप के अश्व में इतनी असामानता क्यों है। कहने लगा कि मैं अपनी सुध रखता हूं और मेरे घोड़े की सुधि मेरा नौकर रखता है॥

५५—एक बालक ने अपनी माता से कहा कि माता, आज मेरे मस्तक में व्यथा है, मैं पाठशाला नहीं जाना चाहता, माता ने कहा, अच्छा तुम घरही पर रह कर चिकित्सा करो, लड़के ने सुनतेही उत्तर दिया, यह नहीं, अब मैं पाठशाला अवश्य जाऊंगा मेरे कपाल में पीड़ा तो है पर इससे कुछ हानि नहीं हुई।

५६—जब कि डाक्टर जान्सन ने मिसपोर्टर के साथ प्रणय किया तो साफ़ २ कह दिया कि मैं निकृष्ट श्रेणी का

हूं मेरे पास ऐश्वर्य भी नहीं है और अपने चचा को मैंने फांसी भी दी है, इत्याकर्ण चतुराङ्गना ने अपने को उसमें अधिकतर हीन सूचित कराने के निमित्त कहा कि मैं भी अकिञ्चन हूं, ऐश्वर्यवती नहीं और यद्यपि मैं अपने किसी स्वकुटुम्बीय व्यक्ति की घातिनी नहीं हूं तथापि मेरे ऐसे ५० हैं कि जिन्हों ने मेरे कारण अपने प्राण दे दिये ॥

५७—वृन्दाबन में दो भाई रहे, जिनमें से एक धनाढ्य और दूसरा दरिद्र था, धनी ने फाल्गुन मास में नांच करवायी तो उसकी देखा देखी छोटे भाई ग़रीबसहाय ने भी नाच करवायी, जब अर्द्धरात्रि हुई तो दीप का तेल्य चोराय गया और नौकर ने आकर कहा कि धर्म्मावतार तेल तो चुक गयो, अब का करिवो चहिए, आप ने आज्ञा दियी कि छप्पर में ते खर लियाय वाही कूं बारो, अनुचरों ने ऐसाही किया, जब दो घड़ी में छप्पर भी समाप्त हो गया तब फिर आप ने कहा कि बांस लाय के बारो, लोगों ने बांस लाकर भी जला दिया और कहा कि अब कहा कहत हो, तब तो आप सूत गये औ वेश्या से कहिवे लगे, "बीवी" तू नाचे जा, मोकूं विश्वास है तू आछोही नाच नाचेगी ॥

५८—किसी मनुष्य ने एक साहूकार से दो प्रश्न किये एक यह कि मुझको दो रुपियः ऋण दो और दूसरा यह कि दो वर्ष पर्य्यन्त मांगो न, साहूकार ने कहा कि पहली बात तो तुम्हारी हमें अङ्गीकार नहीं पर दूसरी अच्छा तुम्हारे कहने से स्वीकार कर लेता हूं जब जी चाहे दे जाना मैं दो बरस तक न मागूंगा ॥

५९—सन् १८५७ ई० के देश विप्लव में दिल्ली में चार

बदमाश बाहर के एक साहूकार के घर में घुस गए और धमकाने लगे कि माल लाओ, साहूकार ने कहा कि तुम मेरे घर में कितनी पूंजी अनुमान करते हो उन्हों ने कहा एक लाख रुपिया नक़द, फिर उसने पूछा कि तुम्हारे जान इस नगर में दशावर के कितने आदमी होंगे उन्हों ने कहा दो लाख आदमी, यह सुन कर साहूकार ने दो रुपिया निकाल कर उनके हाथ पर रख दिया और कहा इस हिसाब से तुम चारों आठ २ आने बांट लो, इस वास्ते की बाकी तुम्हारे साथी दो लाख हैं तो और भी आन कर मुझ से और रुपिया मांगेंगे और मुझे भी उनको देना पड़ेगा ॥

६०—एक साहब बहादुर जो कहीं के अधिकारी नियत हो भेजे गए थे प्रजा पर मालगुज़ारी और टैक्स की इतनी अधिकाई कर दी कि सब उनसे नाराज़ हो गए अवधि पूरी होने पर साहब ने घर लौट जाने के समय विचारा कि अब कुछ टैक्सों को कम कर दें जिसमें पीछे हमारी सब कोई तारीफ करें यह अपना इरादा उक्त साहब ने रिसीविङ्ग आफ़िसर से भी कह सुनाया वह बोला आप ऐसा क्यों करते हो मैं वैसाही न कर दूं कि सांप मरे न लाठी टूटे साहब बोले तो इससे अच्छा और क्या होगा एतना कह दूसरे साहब उस पद पर नियत होतेही उन टैक्सों को सवाई और डेढ़ुहा कर दिया इनका यह अत्याचार देख प्रजा सब कहने लगी यह तो अच्छे मनहूस कदम आये कि आतेही अन्धाधुन्ध मचा दिया इनसे तो पहिलेही वाले भले थे, साहब बहादुर का जो मतलब था सो बर आया ॥

६१—एक दिल्ली के बनिये लखनऊ की सैर को गये, वहां एक शोहदे ने उनको बड़ी शान के साथ उम्दा पोशाक पहिने हुए बज़ार में घूमते देख कर भले मानसों की नांई सामने आ सलाम किया, मिज़ाज शरीफ़ पूछ कर पूछा कि आप का कहां से तशरीफ़ लाना हुआ, उन्हों ने कहा दिल्ली से सैर को आये हैं ॰ उनसे कहा, आइये मैं बख़ूबी आप को यहां की सैर कराऊं, वह सीधे सादे आदमी उस के साथ हो लिये रास्ते में शोहदे ने पूछा कि साहिब इस वक्त के बजे हैं बनिये साहिब ने कुछ समझ कर दानाई से जवाब दिया कि मालूम नहीं मेरी घड़ी बन्द पड़ी है. । फिर थोड़ी देर के बाद उसने चुटकी में हुलास लेकर पेश किया कि सूंघिए. । उन्हों ने कहा जनाब मैं हुलास नहीं सूंघता, ख़ैर शोहदा राम उन्हें थोड़ा इधर उधर फिरा कर राही हुए जब वह चला गया तो इन्हें हुलास की ज़रूरत पड़ी जेब में हाथ डाल देखते हैं तो चांदी की हुलास दानी नदारद, और उसकी जगह पर एक काग़ज़ हिन्दी लिखा हुआ उस के हाथ आ गया, । पढ़ा तो उस में लिखा था कि जब आप हुलास नहीं सूंघते तो हुलास दानी रखने से क्या फ़ायदा और घड़ी चलती नहीं तो उसे जेब में रखने का क्या काम। यह देख कर जो घड़ी देखने लगे तो वह भी ग़ायब थी। वह बहुत घबराये कहने लगे वल्ल तेरे हाथ की सफ़ाई क्या बे मालूम दोनों चीज़ें उड़ाई हैं ॥

६२—एक रंगीला रंगरेज एक व्यभिचारिणी स्त्री की चाह के रंग में सरा बोर डूबा रहता रंग रंग के दुपट्टे रंग रंग के उसे उढ़ा अजब रंग के भांतिर के रंग उठा आनंद के रंगमें

मगन रहता कभी आप उसके घर जाता और कभी किसी
युक्ति से उस को अपने पास बुला मजे उड़ाता एक दिन
उस रंगरेज को उस के घर जाने का अवकाश न मिला और
वह भी किसी कारण से उसके पास न आसकी जब सांझ
होने आई तब उस रंगरेज ने अपने शागिर्द से कहा कि
बेटा आज तू मेरी प्यारी को बुला ला वह दौड़ा गया और
उसताद का सन्देसा कह सुनाया वह छत्तीसी नई उठती
जवानी शागिर्द को पाके उस्ताद को भूल गई और शागिर्द
को चित्रसारी में ले जाके उसे छाती लगा कहने लगी
कि प्यारे आज तो तू मेरे चाह की दृष्टि को अपने समागम
के शहाब में लालो लाल कर दे यह उसे अपनी रानी में द-
बा के ऐसा निचोड़ा कि आप तो लाल लाल हो गई और
वह शागिर्द ऐसा होगया जैसे कोई खार दे के रंग उतार
ले जब उस को बड़ी बिलम्ब हुई न उस रंगरेज को प्यारी
को लाया न आके कुछ जवाब सुनाया तब वह रंगरेज अपनी
प्यारी की चाह और विरहसे से व्याकुल हो क्रोध कर तल
वार हाथ में ले उस के घर पहुंचा दरवाजे से पुकार के
कहने लगा कि किवाड़े खोल उसने उसकी आवाज पह-
चान उस के शागिर्द को कोठरी में बन्द कर किवाड़े खो-
ल दिये जब वह घर के भीतर आया तो उस को क्रोध में
देख कहने लगी कि कुशल तो है इतने क्रोध का क्या का-
रण है वह बोला कि मैंने तुम्हारे बुलाने के लिये अपने
शागिर्द को भेजा था एक पहर बिता न तुम गई न वह
दुष्ट जवाब लेके पहुंचा यह सुन वह बोली कि इस तुम्हा-
री समझ पर मार २ जाना चाहिये भला कोई गृहस्त

[illegible] के पास ऐसे [illegible] के हाथ सन्देसा भेजती हैं किसी बूढ़ी स्त्री चतुर को ऐसी जगह भेजते हैं कि समय विचार एक युक्ति से कहे कि दूसरा न समझ सके उस छो-करे ने दरवाजे से पुकार के कहा कि चलो तुम्हे मियां ने बुलाया है यह कह भागा चलागया मैं मारे लाज के मरती हूं कि परोस के लोग अपने जी में कहते होंगे कि इस भली मानस को भी किसी से लगावट है यह बातें वह कह र-ही थी कि उसका खाविंद दूर से देख पड़ा उसे देखतेही उस रंगरेज का रंग उड़ गया और मारे डर के थर २ कां-प कांप कहने लगा कि अरी मेरी प्राणप्यारी अब मेरे प्रा-ण कैसे बचेंगे वह बोली कि घबराओ मत तुम अपनी तल वार निकाल घुमाते आव बाव बकते झुकते चले जाना मैं समझ लूंगी उसके सिखाने से वह वैसेही नंगी तलवार घुमाते आव वाव बकते झकते चला गया पीछे से उसके खाविंद ने आके पूछा कि यह कौन था जो नंगी तलवार घुमाते आव वाव बकते झकते भागा चला गया वह बोली कि आज परमेश्वर ने बड़ी कुशल की कि इस समय तुम आ पहुंचे नहीं तो मुझे जीता न पाते एक लड़का भागता हुआ यहां आके इस कोठरी में घुस गया और भीतर से किवाड़ बन्द कर लिया पीछे से यह दीवा-ना सोहाई नंगी तलवार लिये आ पहुंचा और कहने लगा कि उस लड़के को निकाल दे नहीं तो तेरा सिर काटता हूं यह सुन मैं घबराई इतने में परमेश्वर ने बड़ी कृपा की कि तुम देख पड़े. तुम्हारे देखते ही वह जाता रहा जो तुम्हारे आने में कुछ भी विलंब होता तो वह मुझे बिन

मारे न छोड़ता यह सुन उसका खाविंद बोला कि वह लड़का कहां है उसने कहा कि इस कोठरी में तब उसने कोठरी में उसको निकाल बड़ा प्यार कर धीर्य दे पुच्कार खाना खिला के कहा कि यह घर तुम अपना घर जानो जब जी चाहे तब चले आया करो यह देखा चाहिये कि उस स्त्री ने दो यारों को अपने खाविंद के सामने घर से निकाल दिया और खाविंद को प्रसन्न रक्खा स्त्रियों से क्या कोई पार पावे ॥

६३—एक चतुर मनुष्य ने स्त्रियों के छलों को सुन के उन के चरित्रों की बहुतसी पोथियां बनाई थीं कि उन के पढ़ने से कोई स्त्रियोंके छल में न भूले और वे पोथियां सदा अपने पास रखता जहां जाता अपने साथ ले जाता एक समय उन पोथियों सहित किसी शहर में जाके एक बहुत अच्छे मकान में जा उतरा उस मकान के सामने बहुत अच्छा महल था उस महल की खिड़की में एक परम सुंदर चन्द्रमुखी कान्ता बैठी थी उस मनुष्य के अच्छे असबाब में पोथियां बहुत सी देख अचंभे में हो होली के हाथ उसे अपने घर में बुलाके कहा कि आप के साथ पोथियां बहुत सी होने का क्या कारण है उसने उत्तर दिया कि स्त्रियों के चरित्र की यह सब पोथियां मैंने लिखी हैं कि इन्हें पढ़ के कोई तिरिया चरित्र के जाल में न फंसे यह सुन कर चुप हो रही और कहने लगी कि विदेशी को सेवा करना और उसे सुख देना बहुत अच्छी बात है इस लिये मेरी यह विनती है कि आप कमर खोल कपड़े हथियार उतार इस पलंग पर आराम कीजिये फिर अपने मकान को

[illegible]

कपड़े हथियार उतार पलंग पर जा बैठा तब रंग रंग के सुथरे शीशे भांति२ को सुगंधित शराबों से भरे हुए और वैसे ही गिलास आगे रख शराब पीला अपनी समागम के नशे में अत्यंत गड़ाचूर किया इतने में उसके खाविन्द ने दरवाज़े पर आके पुकारा कि दरवाज़े खोल दो यह सुन उसने लौंडी से कहा कि मियां साहब आये हैं जब लौंड़ी दरवाज़ा खोलने चली तब यह मनुष्य बोला कि अब मुझै क्या करना चाहिये वह बोली कि तुम इस संदूक में जाबैठो ऊपर से बंद कर ताला लगाये देती हूं वे उस संदूक में बंद हुए और उस के खाबिंद ने घर में आके पूछा कि यह क्या चरित है वह बोली कि आज एक मेरा बड़ा प्यारा महमान आया है उस के कारण यह सब हैं उसने पूछा कि वह कहां है बोली कि तुम्हे देख मैंने इस संदूक में बंद कर और यह ताली मेरे पास है जब उस का खाविंद ताली ले संदूक खोलने चला तब तो वह कहकहे मार के हंसी और कहने लगी कि तुम तो बड़े चतुर थे परन्तु मैंने आज तुम्हे अच्छा बहलाया यह तुम न सोचे कि जो मैं ऐसा काम करती तो तुम से कह देती यह सुन उसका खाविंद लज्जित हो पलंग पर आबैठा और वह उस की गोद में लोट अपना सिर पकड़ कहने लगी कि आज मेरे सिर में ऐसी पीर होती है कि प्राण निकले जाते हैं कुछ औषधि लाओ जिसके लगाने खाने से यह पीर मिटे और लौंड़ी से से कहा कि यह कपड़े हथियार जिसकी लाई है उसे दे आ उसका खाविंद तो औषधि लेने गया तब उसने संदूक

खोल उन्हें निकाल के कहा कि क्यों जी यह भी चरित्र तुम्हारी पोथियों में लिखा है यह देख सुन वह पोथियों वाला अपने प्राण ले भागा अपने मकान में आके सारी पोथियों में आग लगादी भला तिरिया चरित्र के जाल में कोई भी निकल सकता है।

६४—एक सौदागर सौदागरी के लिये विदेश को गया था उस के जाने के पीछे उस की स्त्री यारों को बुला २ बड़े आनंद और चैन से मजे उड़ाने लगी बहुत दिन बीते वह सौदागर शहर में आके सराय में उतरा और कुटनी को बुला के बोला कि मेरा जी चाहता है कि कुछ दिन इस शहर में रह कर सौदागरी भी करूं और जी भी बहलाऊं इसलिये तुम को बुलवाया है कि कोई बड़ी सुन्दरी कान्ता लाओ जिस के साथ जी बहले और प्रसन्न होऊं तो तुम्हे भी बहुत प्रसन्न करूंगा यह सुन वह बोली कि ऐसी नवेली छबीली लाओ कि जिस के देखतेही आनंद में मग्न हो जाय कि सब देह गेह भूला दो यह कह बेजाने उस की जोरू के पास जाके कहने लगी कि तेरे लिये आज मैं ऐसी सोने की चिड़िया लाई हूं जो तुझ से फांसती बने तो फांस ले एक सौदागर बड़ा मालदार इस शहर में आके सराय में उतरा है और सौदागरी के लिये यहां रहैगा वह कोई सुं-दर सुकुमारी कांता भी चाहता है कि उसके साथ भोग बिलास कर आनंद करै यह सुन वह बोली कि इससे क्या भला है कि एक पंथ दो काज मैं चलती हूं और देख कि उस का माल असबाब कैसा उड़ा लाती हूं यह कह अपना शृङ्गार कर बन ठन डोली में बैठ उस बुढ़िया के साथ सराय

[illegible] मेरा खाविंद
है यह जानतेही डोली से झटपट उतर अपना शृङ्गार बि-
गाड़ दौड़ के उसके पास जा दो थप्पर मार कहने लगी कि
अरे व्यभिचारी महादुष्ट मैंने तेरे बिरह में तप कर एक एक
दिन बरस के समान काटा है और तेरी यह दसा है कि
इतने दिन बिदेश में रंडो बाजो करते करते जो नहीं भरा
सराय में भी आया तो सराय में उतर के रंडी बाजी करना
चाहता है तेरे आतेही मैंने सुनाथा परमेश्वर इस बुढ़िया
को भला करै जिसने मुझे बताया यह कह खाबिंद को
मारती धाड़ती ले गई और सब माल असवाब धन दौलत
अपने बस किया यह वैसोही मसल हुई है कि चोरी और
सोना जोरी।

६५—एक किसान की जोरू बड़ी नटखट थी कि एक दिन
सत्तू मसल उस के लड्डू बना कटोरे में रख अपने पति के
खाने के लिये खेत पर लिये जाती थी बीच में एक खिंगा
मुसचंडा बीस बर्ष का नया पट्ठा जवान मिल गया उसे देख
उसका तन मन ऐसा चुलचुलाया कि उस जवान के हाहा
खा बिनती कर पैरों पड़, हाथ पकड़ एक उजाड़ खंड बेहड़
में लेजा बड़े आनंद से समागम करने लगी दो घंटे अच्छा
भोग बिलास कर उसे छोड़ आप लघुबाधा को गई इस बीच
उस जवानने कटोरे को खोल के देखा तो सत्तू के
लड्डू देख पड़े उन सत्तुओं का हाथी बना उसी कटोरे में
रख वैसा का वैसा ही ढांक दिया किसान की स्त्री ने उस
जवान को बिदा कर लड्डूओं का कटोरा उठालिया बिन
देखे भाले जाके अपने पति के आगे रख दिया जब वह

खाने को बैठा और कटोरा पर से कपड़ा उठाया तो सत्तू का हाथी देख पड़ा देखतेही क्रोध कर बोला कि अरी कुमार्गी खोटी है बुद्धि तेरी तूने मेरे साथ यह क्या ठट्ठे बाजी की है कि सत्तू का हाथी बना के मेरे खाने को लाई है वह बोली कि अरे उल्लू बेशऊर मैंने ठट्ठा नहीं किया तेरे प्राण बचाये हैं आज की रात मैंने सुपना देखा कि तेरे पीछे एक मस्त हाथी दौड़ता फिरता है और तूं उसके डर से कांपता हुआ भागा है यह सपना देख डर के मैं जग पड़ी तो देखा कि सबेरा हो गया तब घबरा के पंडित के पास गई और सपने का वृत्तान्त कहा वह बोला कि आज को सांझ को तेरे पति को हाथी से बड़ा भय है यह सुन मैं उस के पैरों पर सिर धर रोने लगी और बिनती करके कहा कि महाराज कुछ ऐसी कृपा करो कि मेरा घर वाला हाथी से बचे उसने कहा कि थोड़े से सत्तू ला जब मैं ले गई तब उसने पानी पढ़ उस पानी से सत्तू गूंध हाथी बना दिया और कहा कि ले जाके अपने पति को खिलादे तो उस का बाल बांका न होगा यह सुन उसने प्रसन्न हो यह सत्तू का हाथी खालिया और अपनी स्त्री से कहा कि शाबास तुझ को और तेरे माता पिता को जो मुझे मरते से बचा लिया देखना चाहिये कि स्त्रियों के ऐसे चरित्र होते हैं कि राह चलते बेजान पहिचान के साथ मजे उड़ा ऐसी बातें बना लेती हैं इन से कौन पार पावे परमेश्वर ही बचावे तो बचे।

६६—एक किसान की स्त्री रंग रंगीली परम रसीली नई छबीली अति अलबेली बड़ी नटखट और छल बल करने में अति चौकस अपने कोठे पर खड़ी सैर कर रही

[illegible]
सुंदर बांका सजीला बड़ी सज धज से उधर आ निकला
उस की सान को रूको देख उस पर ऐसा मोहित हो गया
कि उस की ओर टकटकी लगा के चित्र लिखासा हो रहा
और वहां से पैर न उठा सका किसान की जोरू ने जान
लिया कि यह मुझ पर आशिक हो गया यह समझ नीचे
उतर उसके पास आ घूंघट निकाल उसके कान में मुंहलगा
चली गई वह जवान उस का भेद कुछ न समझा तब घब-
रा के एक बुढ़िया से सब बातें कह भेद पूछने लगा वह
बोली कि इसका भेद यह है कि उसने यह समझाया कि
किसी बुढ़िया को मेरे पास भेजना कि वह तेरी बात मुझसे
और मेरी तुझ से कहे जवान बुढ़िया से कहने लगा कि
तेरे सिवाय दूसरी कौन है कि जो मेरी पीर को मिटावे यह
सुन बुढ़िया ने उस के पास जा उनका संदेसा कह सुना-
या संदेसा सुनते ही उस कान्ता ने बुढ़िया का मुंह काला
कर मोरी की राह से निकाल दिया उसी दसा से बुढ़िया
उस जवान के पास चली आई उसे देख वह व्याकुल और
निरास हो घबराया तब बुढ़िया ने कहा कि तू मत घबरा
मेरा मुंहकाला करना और मोरी से निकालने का यह
सबब है कि तुझे अंधेरी रात में मोरी की राह से बुलाया
है यह सुन वह प्रसन्न हो अंधेरी रात में मोरी की राह से
उस के पास जा पहुंचा उसने उसे देख घर के एक कोने में
में लेजा निहला धुला अच्छे २ कपड़े पहना पकवान मि-
ठाई पान खिला शराब पीला बड़े प्यार से लिपट २ आ नं-
द की तरंग में मजे उड़ा दोनों लिपट के सो रहे ऐसे के

सुधि सोये कि देह का तरसंभाल ।न रहा पिछलीउस स्त्री का सुसरा खेत पर चला तो उसी के पास से निकला यह दसा देख उसके पैर की पाजेब उतार ले गया कि सबेरे अपने बेटे को दिखलाऊंगा इतने में उसकी नींद भी उचटी और पैर पर हाथ पड़ा तो एक पैर में पाजेब न थी उसने समझ लिया कि यह काम मेरे ससुरे का है यह बिचार यार को बिदा कर अपने पति के पास आके जगा कहने लगी कि अरे प्राण प्यारे यहां मच्छरों में क्या पड़ा है चल उस जगह ठंडी २ हवा चल रही वहां हम तुम दोनों मिल के सोवें वह नींद का मारा वहां से उठ के उस के साथ वहां जा सोया और यही जाना कि अभी दो चार घड़ीरात गई है यह न समझा कि सबेरा हुआ चाहता है थोड़ी देर में उसकी स्त्री ने जगा के कहा कि देखो अपने बाप का खोटा चलन कि जहां हम तुम मिले सोते थे वहां आके मेरे एक पैर की पाजेब उतार ले गया संसार में कहीं ऐसे भी सुसरे होते हैं कि जहां बेटा बहू एक साथ सोते हों वहां आवें और पैर से पाजेब उतार ले जावें यह सुन वह मन में अचम्भे होरहा जब दो पहर को उसका बाप खेत जोत के रोटी खाने घर आया तब वह पाजेब बेटे के हाथ पर रख कहने लगा कि देख बेटा यह बहू के गुण कि न जानिये किस के साथ ऐसी बे सुध सोती थी कि मैं एक पैर की गुजरी उतार ले गया और उसको कुछ चेत न हुआ यह सुन उस का बेटा क्रोध कर बोला कि बाप तुम्हें इस बुढ़ापे में मरने के दिनों में भला बूढ़ भस लगा है उस के साथ सांझ से सबेरे तक तो मैं सोता रहा हूं यह सुन वह बूढ़ा

[illegible] के आगे हाथ जोड़ कहने लगा कि बहू मुझसे बड़ा अपराध हुआ तू क्षमा कर वह बोली कि तुम तो मेरे बाप की समान हो तुम्हें मेरा लड़कपन क्षमा करना चाहिये जो हुआ सो हुआ अब इसकी चरचा जाने दो देखा चाहिये स्त्रियों के चरित्र कि यार के साथ प्यार कर सोके मजे उड़ाये और पति को प्रसन्न और ससुर को लज्जित किया इन के चरित्रों से परमेश्वर रक्षा करे ॥

६७—एक स्त्री अपने प्यारे के साथ आनंद कर रही थी इतने में उस के खसम निरे उल्लू ने दरवाजा खड़काया तब उस की जोरू ने अपने यार को मुरगी के दड़बे में बन्दकर मेंढ़ा जो घर में बंधा था उसे खोल दिया मेंढ़ा घर में चारों ओर दौड़ने लगा यह घबराई सी बन कै दरवाजे को जा खोला उस का खसम बोला कि दरवाजा खोलने में इतनी देर क्यों हुई वह बोली कि प्यारे आज इस मेंढ़े ने मुझे ऐसा खिजाया है कि मैं मरते २ बची जो मेरा जीना चाहता है तो इसे मार डाल वह जोरू का गुलाम बेदाम का बेजाने बूझे तलवार निकाल बिना अपराध मेंढ़े को मारने दौड़ा और मेंढ़ा अपने प्राण बचाने के लिये ऐसा भागता फिरता कि उस की बात में न आता भागते २ एक बार मुरगी के दड़बे पर चढ़ के खड़ा हो रहा तब उसने उस बिन अपराधी मेंढ़े पर तलवार का वार किया मेंढ़ा तो वह वार बचा गया और तलवार दड़बे पर जा लगी तो दड़बा कट गया उस में से उस की जोरू का यार निकल आया उसे देख वह बोला कि अबे तू कौन मुरगा है वह बोला कि अरे उल्लू मैं यम दूत हूं जब कोई मरन हार होता है तब मैं उसके प्राण

निकालने आता हूं तू इस समय इस मेढ़े को मार डालना चाहता है इस लिये मैं इस के प्राण निकालने आया हूं यह सुन वह तलवार मियान में कर बोला कि हम इस मेढ़े को अब न मारेंगे देखें तूं कैसे इसके प्राण निकालेगा वह बोला कि जो तुम इसे नहीं मारते तो हम अपनी यमपुरी को जाते हैं यह कह यहां से दबे पांवों चल दिया और वह घर वाला बिन पूछ का गदहा अपनी जोरू से कहने लगा कि तू अब क्या कहती है इस मेढ़े को मारों या छोड़ों वह कहने लगी कि जाने दो मत मारो परन्तु ऐसा बांधों कि छूट न सके कहने से उसने मेढ़े को जकड़ दे बांध अपनी जोरू को प्यार मनुहार करने लगा॥

६८—एक स्त्री अपने यार के साथ बड़े प्यार से बहार के बिहार कर २ आनंद में उन्मत्त हो रही थी इतने में उसका पति प्यारा भी आ पुकारा उसने झट पट दीपक बुझा और यार को अपने पीछे बिठा लौंड़ी से कहा कि दरवाजा खोलदे जब उस का पति छिपे कपाल को चारो आंखों का अंधा घर में आय अंधेरा देख बोला कि यह क्या अंधेर है कि अभी तक दिया नहीं जलाया वह छत्तीसो बोली कि इस महल्ले वाली लुगाइयों के चरित्र देख मेरा जी ऐसा जल रहा है कि अभी इस घर से निकल जाना चाहिये क्योंकि जैसी सङ्गत तैसी बुद्धि हो जाती है वह बोला कि कुशल तो है वह बात तो कहो वह बोली कि आज अभी एक लुगाई अपने घर से आनंद मगनि थी कि उसका पति आ गया उसने झट पट दिया बुझा दिया, और यार को पीछे डाल उठ खड़ी हो अपना दुपट्टा इस भांति उसके

[illegible] और सिर छाती पे [illegible] लेवे मैं तुम्हारे
मुंह पर दुपट्टा डाल तुम्हारा सिर दबाती हूं यार को नि-
काल दिया उसका यह कहना था कि यार निकल बाहिर
हुआ तब उसने उसकी आंखें खोल के कहा कि ऐसी सङ्गत
में कभी रहना न चाहिये उसका पति ऐसा मूर्ख हिये की
आंखों का अंधा कहने लगा कि प्यारी तुम्हें पराई बातों से
क्या आप अपने मन से भले रहो दूसरे की भलाई बुराई
न देखो मसल है कि अपनी करनी पार उतरनी ऐसे समझ
बूझ दोनों चुप हो रहे ऐसे संसार में लोग बे सींग पूंछ के
पशू होते हैं जो लुगाइयों के ऐसे छल में आजाते हैं।

६८—एक मांस क्रेता के दूकान से किसी वकील के एक कुत्ते
ने मुंह में थोड़ा सा मांस का पिण्ड उठा लिया, इस पर
मांस क्रेता ने वकील से पूछा कि यदि किसी का कुत्ता मांस
ले जावे तो नियमानुसार इसका दण्ड क्या है, वकील ने
कहा उसके स्वामी से दाम वसूल कर लेवे तब तो उसने हंस
कर कहा लाइए न फिर बांये हाथ मे १) रु० धर दीजिए।
बिचारे वकील राम लज्जित होकर दाम दे मन में सोचते
बिचारते घर को चल दिये।

७०—मुरशिदाबाद के जगतसेठ साहब के यहां दो खवास
थे एक बहरा दूसरा गूङ्गा वे दोनों चेष्टा बहुत अच्छी सम-
झते थे एक समय एक राजा जगतसेठ साहब से मिलने
आए जगतसेठ साहब ने बात करते करते जरा सा तिनका
चौर की पृथ्वी पर गिरा दिया वे दोनों खवास झटपट चौरा
पटका ले आए।

७१—एक ज्योतिषी ने तारे डूबे में मुहूर्त्त दिया लोगों ने

पूंछा कि तारा डूबे में मुहूर्त्त क्यों दिया ? बोला एक तारा डूबने से क्या होता है रात को सैंकड़ों तारे उगे हुए दिखा देंगे।

७२—एक मस्त हाथी के सामने जा पड़ा महावत ने हटो हटो किया मस्त नहीं हटा तब परमेश्वर ने आके बचाया और मस्त से पूछा कि हाथी के सामने क्यों चला आया हमको परिश्रम करना पड़ा मस्त ने कहा कि हमने हाथी में भी तुम्हें जाना तब भगवान् ने कहा कि हाथी में जाना तो महावत में क्यों न जाना उसने हटो हटो कहा क्यों न हटे।

७३—गंगा के तट पर एक बाबाजी रहते थे और उन को एक चेला भी था भादों को गंगा उमडी थी सायंकाल के समय एक भालू बहा जाता था चेला बोला बाबा जी वह देखो कंबल बहा जाता है बाबाजी को लोभ ने घेरा झट कूद के उस के पास गए रीछ ने पकड़ा अब दोनों बहे जाते हैं चेला चिल्लाता है हे बाबाजी कंबल छोड़ दो तुमही चले आओ बाबाजी बोले बच्चा मैं तो छोड़ता हूं पर कंबल ही मुझ को नहीं छोड़ता।

७४—एक बादशाह ने भाण्डों से दुःखी हो आज्ञा दी कि आज अभी इन सब को हमारे राज्य से बाहर निकाल दो क्यों कि इन से हमारे सभ्यगणों का बहुधा अपमान होता है। जब यह समाचार उन भाण्डों के कर्णगत हुआ तो सब के सब अत्यन्त चिन्ता में मग्न हो एकस्थान में एकत्र हुए और आपस में सम्मति की कि आज कोई ऐसो उपाय करणो चाहिये जिससे बादशाह प्रसन्न हो हम सब को दण्ड न दे और

[illegible] एक ऐसे वृक्ष

[illegible] था, जब बादशाह

की सवारी उस वृक्ष के नीचे पहुंची, उस समय वह सब भांड उस पर गाने बजाने लगे, बादशाह को जो उसपर दृष्टि पड़ी तो कहा कि आज है क्या, उन्होंने (भांडों) निवेदन किया कि धर्मावतार आप का बोलवाला बना रहे आप हमको आज से अपने राज्य में बसने को निषेध करते हैं अतः हम सब अशरण होकर ईश्वर की शरण में जाते हैं, और आज यही हमारा पहिली मंजिल है॥

७५—एक परम रूपवती और प्रसन्न वदना युवती ने एक बार एक जनैल से कहा कि तुमने बहुतेरे रण में विजय पाकर यश प्राप्त किया है, सम्प्रति अधिक नाम होने की आकांक्षा क्यों करते हो, जनैल ने जवाब दिया कि तुम अपनी कहो कि तुम इतनी सुन्दरी होकर फिर अपना शृङ्गार क्यों करती हो॥

७६—एक मनुष्य ने शराब पीने की शपथ खाई थी, एक दिन उन के मित्र ने आकर कहा आज हमारे यहां अत्युत्तम शराब आई है, तुम चक्खो तो लाऊं, उसने कहा शराब तो मैंने छोड़ दी है, पर हां जो उसे अर्क बहार कहे तो क्या भया है॥

७७—एक रसीले रंगीले तंमोली की दूकान पर तबाही का मारा अफीमी सिपाही आके कहने लगा कि यार मैं दरिद्र के मारे घर बार छोड़ इस शहर में आ पड़ा हूं जो तुम अपनी दूकान में रात को सो रहने दो और कुछ थोड़ी सी खाने की सहायता करो तो मैं तुम्हारा बड़ा गुण मानूंगा

और परमेश्वर भी परोपकार का अच्छा बदला तुम्हें देगा तंबोली ने कहा कि यह तुम्हाराही मकान है रहा करो तब सिपाही रहने लगा उस तंबोली की स्त्री बड़ी छत्तीसी कुभागी थी एक दिन वह सिपाही उस तंबोली के घर के पास अनायास जा निकला तो उस तंबोली की स्त्री ने हट्टा कट्टा नवीन जवान अफीमी और बिदेशी देख कहने लगी कि अरे मियां सिपाही नौकरी करोगे वह बोला कि हम तो नौकरी ही ढूंढ़ते फिरते हैं वह बोली कि जो कोई तुम्हें नौकर रक्खे तो क्या २ काम करोगे उसने कहा कि नौकर को क्या उजर जो मालिक कहै सो करैं वह बोली कि जो तुम हमारी नौकरी करो तो तुम्हें दो रुपये रोज और खाना मिला करेगा सिपाही बोला कि इस से और क्या हम इसी सायत से तुम्हारे नौकर हो चुके जो कहो सो करैं यह सुन तंबोलीन ने उसका हाथ पकड़ अपने घर में ले जाके अच्छे सुथरे पलंग पर बिठा पहिले तो अफ़ीम खिलाई फिर अच्छे अच्छे मेवे खिला बहुत सुथरा मीठा सलोना खाना खिलाया पान खिलाया फिर मीठी २ प्रीति की बातें कर उसे छाती से लगाया पलंग पर लेट रही तब सिपाही भी उठ के दो घंटे तक खूब भोग बिलासकर मज़ा दिखला उसे बहुत खुश किया जब दोनों सुचित हुए तंबो-लिन ने दो रुपये दे के कहा कि इस समय तुम रोज आया करो और इतना ही काम कर खानाखा दो रुपये ले जाया करो सिपाही बहुत प्रसन्न हो दो रुपये हाथ में ले खड ख-ड़ाता तंबोली के पास आके कहने लगा कि यार तेरी दूकान का रहना तो हमें बहुत फला आज हम दो रुपये

[illegible] और खाने पर एक बड़ी सुन्दर [illegible] छबीली [illegible]
के नौकर हो गये वह बोला कि किस काम पर उसने कहा
है कि जो काम औरत और मर्द का होता है तंबोली बोला
कि कल्ल फिर जाओगे जब सिपाही ने कहा कि ऐसी
नौकरी पर क्यों न जावेंगे जहां सुथरा सुथरा खाना और
दो घंटे मज़े उड़ाना और दो रुपये रोज ले आना यह सुन
तंबोली बोला कि उसका घर कहां है उसने कहा कि उस
घरका दरवाज़ा तो बड़े फेर से है पर कोठा वह है जो यहां
से वह देख पड़ता है तंबोली अपने घर का कोठा समझ
मनमें कहने लगा कि देख तो कल्ल तुझे कैसा मज़ा चखाता
हूं दूसरे दिन सिपाही ने कहा कि यार अब हम तो अपनी
नौकरी पर जाते हैं ज्योंही वह सिपाही चला और घर में
जा पलंग पर तंबोलिन के गले में हाथ डाल बैठा था कि
पीछे से तंबोली भी आके दरवाजा खटका के कहा कि
कुंडो खोल दो तब तंबोलिन ने सिपाही को चटाई में लपेट
एक कोने में खड़ा कर कुंडो खोल दी जब वह भीतर आया
तो उसकी छाती से लिपट बड़े प्यार से कहने लगी कि
प्यारे आज तुम अच्छे समय पर आये एक पड़ोसी के घर से
लड्डू आये हैं और मुझे भूख भी लग रही है परन्तु तुम्हारे
बिना अकेले खाने को जी नहीं चाहता था यह कह लड्डुओं
का थाल लाके रख दिया और कहा कि पहिले हम तुम
दोनों मिल के उस चटाई में लड्डू फेंकें देखें किस के फेंके
लड्डू चटाई में बहुत जाते हैं यह कह दोनों बहुत से लड्डू
चटाई में फेंक दिये वहां सिपाही ने मजे से खाये और तंबो
ली भी लड्डू ख[illegible] दुकान पर गया तब तंबोलिन ने सिपाही

को चटाई से निकाल पलंग पर तीन घंटे आनन्द कर दो रुपये दे बिदा किया सिपाही दोनों रुपये ले तंबोली के आगे रख के बोला कि यार आज बड़ी कुशल बीती जैसे मैं जाके पलंग पर उस प्यारी के गले में हाथ डाल बैठा था वैसेही उस का खसम आ पहुंचा हमारी प्यारी बड़ीही चतुर चालाक है मुझे चटाई में लपेट कोने में खड़ाकर कुंडी खोल दी जब वह घर में आया तब लड्डू का थाल आगे रख पहले तो बहुत से लड्डू चटाई में फेंके सो मैंने खाये पीछे फिन दोनों ने खाये जब वह चला गया तब मुझे चटाई से निकाल खूब भोग विलास कर ये दो रुपये दे बिदा किया पर क्या कहूं मेरे साले उसके खसम की सूरत तेरी सी थी ऐसा जान पड़ता था कि तूही है यह सुन तंबोली जी में बहुत जला भुना पर ऊपर से कहने लगा कि अच्छी नौकरी तुम्हारे हाथ लगी है कभी नागा न करना वह बोला कि ऐसी नौकरी में भी नागा करूंगा फिर तीसरे दिन ज्योंही सिपाही उस के घर पहुंचा त्योंहीं तंबोली भी झट पट दौड़ के दरवाजे पर आ खड़ा हुआ उसकी जोरू ने आहट सुनती ही एक तरबूज का छिलका सिपाही के सिर पर रख होज में खड़ा करके कहा कि तुम इस में टहलते रहो देखो तो आज कैसा तमाशा दिखलाती हूं यह बात कह कर कुंडी जा खोली उसका खसम घर के भीतर आ चारों ओर देख भाल बोला कि चटाई में सांप देख पड़ता है यह कह तलवार निकाल चटाई के टुकड़े २ किये जब उस में कुछ न देखा तो झखमार पलंग पर आ बैठा और कहने लगा कि आज मुझे सबेरे से भूख ल[illegible]ी थी इस लिये

[illegible]

[illegible] और [illegible] भरी टो-

करी आगे रखदी और कहने लगी कि हम तुम इस तरबूज के छिलके को अमरूद और नारंगियों से मारें देखें तुम्हारे हाथ का निशाना बहुत लगता है या मेरे हाथ का जिसके हाथ का एक निशाना बढ़ती लगै वह एक सौ तरबूज जीते यह कह बहुत से अमरूद और शंतरे तरबूज के छिलके पर फेंके सो सिपाही ने मजे से चक्खे जब तम्बोली दुकान पर गया तब सिपाही तबाही मे बच के हौज से निकल अपने समागम से तम्बोलिन को दो घंटे तक मजा चक्खा दो रुपये ले तम्बोली के पास आन के कहने लगा कि यार आज तो प्राण जा चुके थे परन्तु हमारी प्यारी की चतुराई और चौकसी से बच गये वह धोका कैसे उसने कहा कि आज ज्योंही मैं पलंग पर जाके बैठा त्योंहीं मेरा साला मेरी प्यारी का पति मानो तूही था आ पहुंचा मेरी प्यारी ने तरबूज का छिलका मेरे सिरपर रख मुझे हौज में खड़ा करदिया और वही अमरूद और शंतरे मुझे पहुंच तो गई सो मैंने खूब चक्खे जब वह साला मुंह काला कर गया तब मैं उसे प्रसन्न कर रुपये ले तेरे पास आ पहुंचा तम्बोली बड़ा क्रोध कर मनमें कहने लगा कि यह मुरगा मेरी ही जोरू को बिगाड़ दो रुपये लाता है और मेरे मुंह पर मुझे गालियां देता है देखों तो कल्ह तेरा दरवाजा ही जला दूंगा कि तू जल मरे और मेरे जीकी जलन मिटै पर ऊपर से बड़े हित प्यार की बातें करता रहा जब चौथे दिन फिर सिपाही उस के घर गया तब पीछे से उसने जाके घर के चारों ओर पर छतियों

में आग लगा दी [illegible] को
सन्दूक में बन्द कर ताला लगा सिर पीट पीट पुकारने लगी
कि अरे सिडी सौदाई गधे तूने अपना घर जलाया सो ज-
लाया पर यह मेरे बाप के घर का सन्दूक तो यह हटा
निकाल नहीं तो मेरे बाप भाई मेरी तेरी दोनों की न
जानिये क्या दुर्दशा करेंगे यह सुन उसने दौड़ के सन्दूक
सिरपर धर बाहर धर गया और उसकी जोरू वह सन्दूक
कहारों से उठवा अपने बाप के घर को चलदी बीच में सि-
पाही को सन्दूक से निकाल एक बाग़ में ले जाके सांझ तक
उस के साथ मन मना बैकुटके भोग विलास किया आनंद
के मजे उड़ा सौ अशरफियां सिपाही को देके बिदा कर आ-
प अपने बाप के घर चली गई और यहां तम्बोली को यह
दगा हुई कि जो कोई आग बुझाने आता तो उसे बुझाने
न देता इस समझ से कि वह सिपाही जलके मर जाय ज-
ब सारा घर जलके भस्म हो गया तब वह दुकान पर आ
बैठा इतने में सिपाही भी आ गया और सारा वृत्तान्त कहा
सो अशरफियां दिखलाके कहने लगा कि भाई तेरी दुकान
का रहना तो ऐसा हमें फला कि जन्म भर को सुखित हो
गये यह सुन तम्बोली कहने लगा कि यार जो ये बातें कहीं
जो कहना पड़े तो कहो कि नहीं वह बोला कि सांच को
आंच क्या हम सब सच २ कह देवे यह सुन तम्बोली सि-
पाही को साथ ले अपनी सुसरार में जा पंचायत जोड़ के
कहने लगा कि मेरी बात तो तुम झूठ मानोगे इस मेरी
जोरू का वृत्तान्त इस सिपाही से पूछलो तब पंचोंने सिपा-
ही से पूछा कि कहो भाई सिपाही क्या बात है वह अफ़ीम

[illegible] नशे की झोंक में [illegible] [illegible] और यह तंबो-
लिन कोठे पर खड़े खड़े सुन रही थी और यह चाहती थी
कि जो यह आंख उठा के मेरी ओर देखें तो कुछ बात ब-
नाले पर उसने अफ़ीम के नशे की झोंक में आंख न उठाई
सिर झुकाये कहता रहा जब सारा वृत्तान्त कह चुका पीछे
से यह कहा कि जब बाग़ में जाके सन्दूक खोला तो मैं उठ
खड़ा हुआ बतलाने में जो आंखें ऊपर उठी तो कोठे पर तं-
बोलिन ने दांतों से जीभ दाब हाथ से मना किया तब सि-
पाही बोला कि इतने में मेरी आंख खुल गई तो कुछ न था
यह सुन पंचोंने कहा कि सुपना कहते हो कि सच मुच वह
बोला कि मुझ बिचारे के नसीब में यह सुख कहां—झोंपड़े
में सोवे महलों का सुपना देखते हैं—तब पंचोंने तम्बोली को
बहुत कायल किया कि तू इस भली मानस को झूठा कलंक
लगाता है यह सिपाही बड़ा सच्चा सीधा है जो सच्चा था
सो कह दिया तंबोली लज्जित हो सब पंचों और अपनी
जोरू और उसके बाप भाइयों के पैरों पड़ने लगा कि मेरी
तक़सीर माफ़ करो ऐसे २ तिरिया चरित्र होते हैं कि आंख
देखे सब कुछ करे पर पकड़ी न जावे ॥

७८—एक लुगाई छटी हुई छत्तीसी कलकत्ते में बड़ी चौक में
एक नये जवान बनिये की दुकान से शक्कर मोल लेने गई
बनियां उसकी उठती जवानी का रङ्ग रूप देख उस पर
आशिक हो गया और उस लुगाई का भी भी लस से ऐसा
फंसा कि देह गेह की सुध बुध नहीं रही निदान बनिये ने
सेर भर शक्कर तौल के उसकी चादर के कोने में बांध दी
और मीठी मीठी बातें कर उस लुगाई का हाथ पकड़-

खडसार के बांनेगा ले जाके भोग विलास किय। शक्कर की मज़े चखानेलगा। इस बीच बनिये के शागिर्दने बिचारा कि यह बिभिचारिणी शक्कर मुफ्त लिये जाती है यह समझ शक्कर तो चादर से खोल ली और धूर उसमें बांध दी जब वह लुगाई बनिये के समागम की मिठाई जी भर खा चुकी तब वहां से बाहिर निकल चादर उठा घर को दौड़ी घर में पहुंच चादर धर शक्कर धरने के लिये बासन लेने कोठरी में गई और उसके खसम ने चादर खोली तो उस में धुर देख बोला कि अरी अभागिनी तू शक्कर लेने गई थी कि धूर वह बोली कि धूर लाने का यह कारण है कि मैं जब बजार में पहुंची तो देखा कि एक मतवाला बैल चारो ओर दौड़ता फिरता है और सारे बजार के लोग उसके डरसे इधर उधर भागे जाते हैं उसके डर से मैंभी भागी तो चादर की कोने से पैसे खुलके गिर पड़े उस समय मारे घबराहट के पैसे चुनने का तो सावकास मुझे न मिला पर उस जगह की धूल समेट चादर में बांध ली उसे पैसे ढूंढके निकाल दे तो मैं फिर जाके शक्कर ले आऊं उस महा कच्चेपक्के मूर्खने बड़ी धूल छानी उड़ाई पर पैसे न पाये तब कहने लगा कि पैसे गये तो जूतो से जानेदे मेरी प्राण प्यारी के प्यारे प्राण तो बचे ऐसे प्रकार धीर्य्य दे उसका सन्तोष किया ॥

७:—एक खुश मसख़रा सदरुलसदूर के मुहकमा में गवाही देने गया, सदराला ने इज़हार देने के वक़्त उससे सवाल किया कि मुद्दआलय ने जिस जगह मुद्दई को रुपया दिया था वह जगह तुमसे कितनी दूर थी, उसने जवाब दिया ४ गज़, ३ फीट, २ इञ्च॰ सदरुलसदर ने फिर दी

[illegible]
उसने कहा कि मैंने उसी वक़्त [illegible] था क्योंकि मैं पहलेही जानता था कि कोई अहमक हम से यह सवाल कर बैठेगा तो मैं क्या जवाब दूंगा।

८०—एक आदमी नें किसी अक़्लमन्द से पूछा कि शराब और तलवार एक सा क्यों है, उसने कहा जब तक खिचती नहीं काम की नहीं होती॰।

८१—एक आदमी का लड़का नदी में तैरने को जाने लगा, चलते वक़्त उसके बाप ने मना किया लड़के ने एक न मानी, तब उसने खफा होकर कहा कि भला बचा तू जा अगर पानी में डूब गया तो देखना ऐसा मारूंगा कि खाल तक उधड़ जावेगी।

८२—कोई दिहाती लड़का गाव के स्कूल को जाता था, राह में एक शिकारी ने पूछा कि तुमने इधर कोई शिकार आते देखा है, लड़के ने कहा और शिकारतो यहां नहीं है. पर हमारा मासूर जाता है जाओ दौड़ो और उसपर निशाना लगा कर मार लाओ॰।

८३—हकीम सुक़रात तमाम नौजवानों को सलाह देता था कि अपना अपना मुंह आईने में देखो, अगर खूब सूरत मालूम हो तो ऐसा काम न करो जो तुम्हारे चेहरे पर धब्बा लगावे और अगर बदसूरत मालूम होतो ऐसे काम करो जिनसे तुम्हारे करतूत का ख़याल लोगों को हो तुम्हारी सूरत का कोई लिहाज़ न करे।

८४—किसी स्त्री ने अपने पति से कहा कि तुम जो किसी से सुन लेते हो उसे सच मानते हो पति ने कहा

ऐसा मैं कभी नहीं कर[illegible]ऊं० तो बताओ तुम्हारा कहना मैंने कब २ सत्य माना है।

८५—किसी ने एक आदमी से यह पूछा कि तुम और तुमारी स्त्री में क्यों नहीं बनती उसने यह उत्तर दिया कि हमारा दोनों का मन एक है उधर वह मालिक बनना चाहती है इधर मैं बनना चाहताहूं एक मन से दो बात कठिनाई से बन पड़ती है यही न बनने का कारण है।

८६—एक यात्री नदी के तट पर इस चिन्ता में खड़ा था कि यदि कोई नौका मिले तो पार उतर जावें कि अकस्मात एक महात्मा आ पहुंचे और बोले कि आप किस चिन्ता में खड़े हैं यात्री ने कहा कि एक नौका चाहता हूं कि पार उतर जाऊं। वह बोले कि यह क्या बड़ी बात है आप मेरी पीठ पर आरूढ़ हों मैं आपको अभी नदी के पार उतार देता हूं० पथिक ने कहा नहीं मैं आप को यह कष्ट नहीं दे सकता, महात्मा ने कहा नहीं २ मैं कुछ बनावट नहीं करता हूं किन्तु मन के सच्चे प्रेम से कहता हूं कि आप को अवश्य पार उतारूंगा जब बहुत बार कहना सुनना हुआ तो उस बिचारे विपत के मारे ने उनकी पीठ पर सवारी की और ये भले लोग उसको ले कर नदी में उतरे जब मझधार में पहुंचे तो किनारे पर से किसी एक दूसरे ने हांक दी कि औ धर्मात्मा मनुष्य जब इसको पार पहुंचा लो तो मुझको भी कृपा करके पार उतारो, यह शब्द सुनतेही आप सवार से कहते हैं कि तो आप उतरिए अब मैं उस दूसरे मनुष्य को लेने जाता हूं० सवार ने कहा हे प्यारे मैं तो डूब जाऊंगा उन्हीं ने कहा यह तो सत्य है

मझधार में फेंक दूसरे को लेने चले और उस भाग्यवान को उसी भांत पीठ पर चढ़ा मझधार तक पहुंचेही थे कि ती सरे मनुष्य ने हांक दी कि उसका बोझ सुनतेही इस उप- कारी कोमल चित्त से न रहा गया दूसरे के साथ भी वही करतूति की जो पहिले के साथ की थी प्रयोजन यह कि इसी भांत कई एक मनुष्यों को तट से ले जाकर मझधार में जा डुबाया यह कौतुक उसी स्थान में बैठे २ एक श्रेष्ट पुरुष देख रहे थे उनों ने आगे बढ़ कर उससे पूछा कि क्यों साधु जन तेरा क्या नाम है जिसका ऐसा काम है, बोला कि मुझको दिल शिकनी किसी को मंजूर नहीं इसी लिए सब मुझको हरदिलअजीज कहते हैं, सच है इस जमाने के हरदिलअजीज ऐसेही होते हैं।

८७—किसी परिहासक और सर्वदा प्रसन्न रहने वाले के पास संयोग वशतः एक परम कुरूपा स्त्री विवाही आई वह जब तब उसको देख कर बहुत झुंझलाता पर कुछ क- ही न सकता कदाचित उस स्त्री ने पुरुष से पूछा कि हे प्रि- यतम तुम्हारे संबन्धी भाई अनेक हैं मैं किस २ से घूंघट नि- काला करूं और किस से नहीं यह मुझको शिक्षा दे पुरुष ने उत्तर दिया कि तू एक मुझ से घूंघट निकाला कर और जिसको जी चाहे मुंह दिखाती फिर।

८८—एक भिक्षुक किसी गृहस्थ के द्वार पर जाकर कुछ मांगने लगा परिचारिका ने कहा कि इस समय यहां को- ई नहीं है क्या अपना सिर लेगा संयोग से घर में से रोटियां

पकाते हुए थपड़ियां ... [illegible] ...ुआ बोला
कि यह जूतियां किसके सिर पड़ती हैं दासी ने कहा कि
एक भिक्षुक पकड़ा गया है उस का सिर लाल हो रहा है
भिक्षुक बोला कि भिक्षुक घरवालों के साथ पकड़ा गया है
या दासी के साथ यह कहता हुआ राही हुआ।

८९—चीनदेश की चित्रसाला में तीन चित्र पृथक२ भावों से खींचे हुए रक्खे हैं और उनका प्रयोजन उन चित्रों के तले लिखा है प्रथम तो एक ऐसे पुरुषका चित्र है जो चिन्ता में भरपूर है और सोच रहा है कि मैं स्त्री ग्रहण करूं या न करूं० दूसरा चित्र इस भाव में है कि एक पुरुष सिरपर हाथ रक्खे पीटता है और रोता है प्रयोजन उसका यह कि उस पुरुष ने स्त्री की है और अब खड़ा पछताता है० तीसरा चित्र यह भाव दिखा रहा है कि एक पुरुष है जो प्रसन्न बदन पूर्णोत्साह हंस रहा है क्योंकि इस पुरुष ने स्त्री बन्धन को छोड़ दिया और विरक्त हो गया अब सब चिन्ता से रहित है॥

९०—किसीने विद्वान से पूछा कि विवाह करने से क्या लाभ है, पण्डित ने कहा प्रथम एक मास का आनन्द पश्चात आयु पर्य्यन्त का कष्ट ।

९१—किसी ने एक वृद्ध से पूछा कि कभी जब उजाड़ जङ्गल में स्नान का संयोग पड़ जाय तो हम किस ओर मुंह करके नहावें उत्तर दिया कि अपने कपड़ों की ओर मुंह करो कि चोर कपड़े न उठा लेजाय और तुम नंगे न फिरो।

९२—एक याचक ने किसी सूम से जाकर कहा कि कुछ दिलवा, सूम ने कहा पहिले तू मेरी याचना पूरी कर

[illegible]
है बोला बस यही तू मुझ से कुछ मत कह।

९३—एक चोर किसी का कुछ कपड़ा चुरा लाया और बाजार में बेचने गया, दलाल को दिया कि बेंच दे वहां कोई दूसरा उचक्का पहुंचा दलाल के हाथसे कपड़ा मार ले गया चोर शून्य हस्त मित्रों में गया मित्रों ने पूछा कपड़ा कितने पर बिका कहने लगा जितने पर लिया था।

९४—किसी राजा के नेत्रों में व्यथा हुई औषधि के लिए बैद्य को बुलाया बैद्य ने कहा कि पांव के तलवे में मिंहदी लगाओ राजा के अन्तःपुर का सेवक एक नपुंक खड़ा था बोला कि नेत्र और पांव का क्या सम्बन्ध है बैद्य ने कहा जो अण्डकोश का टोढ़ी के साथ है क्योंकि देखो नपुंसकों के अण्डकोश नहीं होते हैं उनकी टोढ़ी पर भी बाल नहीं आते, राजा यह सुन कर हंसा बैद्य को कुछ दिया।

९५—एक दिन कोई सतपुरुष मार्ग में चला जाता था कि कोठे पर से एक मनुष्य गिर पड़ा और उसके सिर पर आ प्राप्त हुआ और उनकी गरदन लचक गई बड़ी चोट लगी लाचार खट्वाशायी होकर पड़ गए० बहुत से लोग खबर लेने आए पूछने लगे कि प्रभो कैसी दशा है सत्पुरुष ने कहा कि इससे क्या बढ़ कर दुर्दशा होगी कि कोठे से कोई गिरे गर्द्दन मेरी टूटे।

९६—रामानुज स्वामी से किसी ने हंसी में कहा यत्तराजभ्रायांति स्वामी ने उत्तर दिया अत्र राजा प्रजा सर्व्वे अन्तयजा।

९७—एक बहिरे को मरने को समय कोई गङ्गाजल

देने लगा बहरे ने पूछा क्या है उसने कहा ब्रह्मद्रव बहि-रे ने कहा कि मरने के समय ब्रह्मद्रव्य क्यों नरक में डालने को देते हो।

९८—एकने एकसे कहा कि एकादशी का व्रत करके द्वादशी का पारण करना उसने व्रत तो नहीं किया पर पारण किया जब उसने पूछा कि कहो व्रत किया था तब वह बोला कि भाई व्रत तो नहीं हो सका पर तुम्हारे डर के मारे पारण कर लिया कि जो बने सोई सही।

९९—एक जुआरी से किसी ने कहा कि तेरा बाप मर-गया चल उसने कहा तैय्यारी करो मैं आया फिर आकर उसने कहा कि तैय्यारी भी हो चुकी चलो तब बोला कि इसी राह से न लाओगे हम यहीं से संग हो लेंगे।

१००—एक निर्लज्ज को पगड़ी पर चील बैठी तो बोला कि बरताने तक पहुंची।

१०१—किसी ने तेली से जात पूंछा तब उसने उत्तर दिया कि हमारी जात न हो तो देशभर में अन्धेर हो जाय।

१०२—कोई एक धुनिये को एक बड़े आदमी के पास ले गया और कहा कि इन के घर से सबको लड़ावर मिलती है।

१०३—बीरबल से बादशाह ने पूछा कि बनिये क्या खा कर इतने मोटे होते हैं बीरबल ने कहा गम खाते हैं बाद-शाह ने कहा हम भी खायंगे बीरबल ने कहा कि आप खायंगे राज गारत हो जायगा।

१०४—छकड़े पर बादशाही तोप जाती थी उसके बोझ से छकड़ा टूट गया तब किसी मसखरे ने कहा कि जिस पर तोप चढ़ी थी यह शिकस्त हुआ।

[illegible]

रामय कहता गुइने कहा कि कुम्भकरण में भी भ है और बिभीषण में भी भ है। तो रावण में भ क्यों न हो।

१०६—एक धूर्त्त किसी से बटलोही मंगनी लेगया जब कि फिरने आया उस्के साथ एक लोटिया देगया उसने पूंछा कि लोटिया कैसो धूर्त्त ने कहा कि बटलोइयाने बचा दिया है फिर दूसरी बेर बटलोइया लेगया थोड़े दिन के बाद कहला भेजा कि बटलोही मरगई उसने कहा कि कहीं बटलोही भी मरी है धूर्त्त ने उत्तर दिया कि कहीं बटलोही ने भी बचा जन्मा है।

१०७—धर्मराज, भगवान, और अर्जुन एक ऋषीश्वर के यहां न्यौता देने गए ऋषीश्वरने पहिले न्यौता माना और फिर ऊंचे सुरसे रोए तब धर्मराज भी रोए और भगवान् भी रोए और अर्जुन भी रोए जब घर फिर आए तब अर्जुन ने भगवान् से पूछा कि आप क्यों रोए भगवान् नें कहा कि ब्राह्मण तो इस वास्ते रोए कि हाय हम को राजा का धान खाना पड़ेगा धर्मराज इस वास्ते रोए कि हमारा धान ऐसा निषिद्ध है कि ब्राह्मण उसे खाने में ऐसा दुखी होता है और हम इस वास्ते रोए कि देखो अभी ऐसा धर्म है आगे ब्राह्मण खाने के पीछे धर्म छोड़ते फिरैंगे और तुम हम लोगों को रोते देख कर व्यर्थ रोए।

१०८—किसी राजा की सभा में एक कविजी के चुपचाप बैठ रहा; इस में कोई राज सभा में से बोला कि आज क्या है जो कवि जी तुम मौन गहे बैठे हो? इसने उसकी बात का उत्तर तो न दिया पर यह दोहा पढ़ा ' अति का

भला न बरसना, अति की भली न धुप्प। अति का भला न बोलना अति की भली न चुप्प'। उसने भी इस दोहे को पढ़ सुनाया० कौन चहे है बरसना कौन चहे है धुप्प। कौन चहे है बोलना कौन चहे है चुप्प ॥ फिर कवि ने यह दोहा कह सुनाया० माली चाहै बरसना धोबी चाहै धुप्प। साहु जी चाहै बोलना चोर जो चाहै चुप्प ॥

१०९—एक बनिये के घर एक समय दो तीन चोर घुस आये जब चोरी करके गठरी मुटरी बांध के ले चलने को तैयार हुए तब बनिये की आंख खुली और उसने दूर से ढांप लिया कि वह दो तीन आदमी हैं और मैं अकेला हूं यदि मैं चिल्लाऊंगा और माल बचाने का विचार करूंगा तो अवश्य वह सब मिल कर मुझे मारेंगे यह विचार कर उसने एक जुगत सोची स्त्री को जगा कर चुपके से कहा कि घर में चोर है तू फूटकर रो कि हाय मुझे अकेला छोड़े जाय है उसने वैसाही किया। रोना सुन कर सब महल्ले वाले दौड़े और ऐसे कुसमय रोने का कारण पूछने लगे। स्त्री ने कहा "वह नहीं मानते मुझे अकेला छोड़कर कहते हैं कि हम अभी जगन्नाथ जी जांय हैं" मुहल्ले वाले बनिये को समझावने लगे कि स्त्री को ऐसा रोता हुआ छोड़ कर जगन्नाथ जाना तुम्हें योग्य नहीं है० तब बनिया चोरों की तरफ इशारह करके उनसे कहने लगा कि भाइयो मैं क्या करूं देखो संगी तो गठरी मुठरी बांधे तैयार खड़े हैं यह सुनतेही भीड़ को देख सब छोड़ कर जी ले भाग गये।

११०—सुलेमान पैग़म्बर ने अपनी कहावतों में एक स्थान पर लिखा है कि कर्कशा स्त्री काल से भी अधिक दुख-

[illegible]

[illegible]

भला काल जो आपका आज्ञारूप है उससे मनुष्य क्या बड़ा होगा, ईश्वर ने कहा, मेरे पैगम्बर ने झूठ न लिखा होगा यदि तुझे शंका हो तो जा मनुष्य का जन्म लेकर इस बात की परीक्षा करले, काल ने मनुष्य जन्म लिया और दैव इच्छा से उसका विवाह एक महाचण्डी और कलह कारिणी के संग हुआ घर आये एक महीना भी नहीं हुआ था कि कर्कशा ने काल के नाकों दम कर दिया वह महादुखी रहने लगा और कहने लगा कि किसी प्रकार शरीर छूटजाय और इससे जी बचे परन्तु कुछ समय में एक पुत्र उसको उत्पन्न होगया कालने विचारा कि जब तक वह समर्थ न हो जाय तब तक शरीर छोड़ना धर्म नहीं, अन्त को जब पुत्र की अवस्था १६ वर्ष की पहुंची तब बनमें उसे संग ले गया और मनुष्य देह छोड़ कर अपने काल रूप का दर्शन देकर कहा कि मुझे पैग़म्बर के वचन पर शंका करने के अपराध में मृत्यु लोक में जन्म लेना पड़ा था अब मैं जाता-हूं पुत्र ने पिता के चरण पकड़ कर कहा कि "आप जाते तो हैं मेरे जीविका क्या उपाय किये जाते हैं मैं तुम्हारा पुत्र कहला कर क्या भीख मांग कर निर्वाह करूंगा" पिता ने कहा मैं तुझे एक जुगत बताये देताहूं जिस में तू बहुत शीघ्र बड़ा धनवान होजायगा, तू वैद्य का उद्यम कीजियो जिस रोगी के पास देखने को जाना यदि मैं वहां तुझे दीखजाऊं तो कह दीजो कि वह असाध्य है, किसी भांति न जीयेगा और यदि मैं वहां न दीखूं तो नाम मात्र

... खाक मिट्टी दे दीजो वह अव-
श्य अच्छा हो जायगा क्योंकि उसका काल तो आयाही नहीं
है पुत्र बहुत प्रसन्न होता हुआ घर आया और वैद्य का उद्य-
म करने लगा, थोड़े ही दिनों में ऐसा प्रसिद्ध होगया कि
देशान्तरों में उसका नाम फैल गया क्योंकि जो वह कह दे-
ता था टलता नहीं था जिस को कह देता था कि न जीये-
गा कोटि उपाय करो कुछ नहीं होता था और जो कैसाही
मरने को पड़ा हो वह कहदेता था कि चंगा होजायगा, अ-
च्छा होजाता था० एक देश का राजा बीमार हुआ रानी ने
ढिंढोरा पिटवादी कि जो वैद्य मेरे पति को आराम करदे-
गा, उसे आधा राज बटवादूंगी यह वैद्य सुनकर चला प-
रन्तु इसकी हिकमत तो उतनीहीं थी० जीमें सोचने लगा
यदि पिताके दर्शन वहां हुए तो मैं क्या कर सकूंगा, जब
राजा को देखने को गया तो कालजी महाराज एक कोने
में विराजमान दीखे, पुत्र को बड़ा क्रोध हुआ कि मुझे
राज्य मिलता सो इस के होने के कारण हाथ से निकला जा-
ता है कहने लगा पिता यहां कहां बैठो हो मेरी माता य-
हां तुम्हे खोजते २ आती है यह सुन कर उस कर्कशा के
भय से काल भाग गया; राजा अच्छा होगया वैद्य को बड़ा
पारितोषिक मिला ईश्वर के सामने पैगम्बर ने काल से पू-
छा कि क्यों भाई अब तो मेरे लिखे में शंका नहीं रही जब
तुम काल होकर कर्कशा के भय से भागे कालने स्वीकार
किया कि ठीक है कर्कशा स्त्री मिलना संसार में पुरुष के
लिये मौत से अधिक दुख दाई होता है॥

१११—एक गरीब शाइर किसी अमीर के मकान पर

[illegible]
[illegible]
साथ जवाब दिया " जी नहीं मैंने सुना कि इस मकान में एक रईस भी रहते हैं उन को मुलाक़ात को आया हूं "

११२—एक हकीम से कोई शख़्स हंसी कर रहा था कि जिस बीमार के घर आप गये गोया उसके लिये मौत का पैग़ाम आया। हकीम साहिब ने चिढ़ कर कहा " भला" कोई आदमी जिस का हमने इलाज किया हो आकर कह तो दे कि हमने उसको दवा गफ़लत या बेवकूफ़ी के साथ की" उस शख़्स ने जवाब दिया " यह तो आपनेबड़ी लायकी की बात कही इस में आप क्यों कायल होजियेगा क्योंकि मुर्दे तो अपना हाल कहने आवेंही गे नहीं "

११३—किसी अमीर का एक नौकर बड़ा ग़रीब था एक रोज़ अमीर ने उससे मुर्ग़ का सालन पकवाया। ख़िदमतगार जिस वक़्त सालन मालिक के सामने लाने लगा उसकी तबियत चाही और बेतकल्लुफ़ मुर्ग़ की एक टांग निकाल कर खा गया। जब बाक़ी सालन की रकाबी अमीर के सामने रक्खी गई उन्हों ने मुर्ग़ की एक टांग गाइब देख नौकर से पूछा कि एक टांग क्या हुई नौकर ने जवाब दिया "हुज़ूर को मालूम नहीं बाज़े मुर्ग़ के एक ही टांग होती है। " अमीर उसको यह शरारत की बात सुन कर चुप रह गये लेकिन वह ग़रीब इस पर भी बाज़ न आया। दूसरे दिन जब अमीर सैर के लिये निकले यह भी साथ था। एक मुर्ग़ नज़र पड़ा जो जैसा कि मुर्ग़ का अक्सर क़ाइदा है अपनी एक टांग उठाए एक

खड़ा था। नौकर ने इस को देख कर मालिक से कहा "हु-
ज़ूर मुलाहज़ा फ़र्मावें इस मुर्ग़ के भी एक टांग है" अमी-
र ने यह सुन कर हथेली बजाई जिस की अवाज़ से चौक
कर मुर्ग़ अपनी दूसरी टांग निकाल भागगया। इस पर अ-
मीर ने ख़िदमतगार से कहा "तुझे शर्म नहीं आती देख
दो टांग है" नौकर बोला "ठीक है लेकिन जिस वक़्त में
मुर्ग का सालन सामने आया था उस वक़्त हुज़ूर ने ह-
थेली न बजाई नहीं तो वह मुर्ग़ भी ज़रूर अपनी दूसरी
टांग बाहर निकाल देता॥

११४—एक भले मानस ने अपने नौकर से कहा "तूएक
ही पाजी है" संजोग से घड़ी में उसी वक़्त दो बजे यह
बदमआश बोला "ख़ोदावन्द घड़ी कहती है दो"।

११५—एक आदमी ने अपने दोस्त से पूछा "क्यों भा-
ई तुम्हारी भावज को बेटा हुआ कि बेटी" आप बोलेभा-
ई मुझे भी अबतक नहीं मालूमकि मैंचाचा बनाया चाची"।

११६—किसी लाइक़ मोलवी ने एक बार निहायत उम्दा
और दिलचस्प तौर पर तक़रीर की कि ख़ैरात के बराबर
दुनिया में कोई अच्छा काम नहीं है।

दो० सब से दिया अनूप है, दिया करो सब कोइ।
घर में धरा न पाइये, जो कर दिया न होइ॥

एक मशहूर कंजूस जो वहां मौजूद था बोला "इस तक़रीर
से यह अच्छी तरह साबित हो जाता है कि ख़ैरात करना
फ़र्ज़ है। इस लिये मेरा भी जी चाहता है कि फ़क़ीर हो
जाऊं॥

११७—एक ग़रीब शाइर किसी तबीअतदार अमीर से उस-

[illegible]

[illegible]

किन जी में हैरान था कि मुझे तो कोई साली हुई नहीं साढ़ू कहां से आया। बातों बात अमीर ने पूछा कि आप से मेरी कौन सी साली ब्याही हैं। इस ग़रीब ने जवाब दिया कि समुद्र मथने से जो दो लड़कियां दरिद्रा, और लक्ष्मी पैदा हुई थीं उनमें से छोटी बहीन लक्ष्मी का ब्याह तो आप से हुआ और बड़ी बहिन दरिद्रा का मुझ से इस नाते हम आप साढ़ू हुए। इस जुमले से अमीर की तबियत भर आई और उस ग़रीब को बहुत कुछ दिया॥

११८—एक साहिब अपने बेरे पर बहुत खफ़ा हुए और गुस्से में कहने लगे "तुम गधा है—सूअर है—सूअर का बच्चा है"। बेरा कांपता हुआ हाथ जोड़कर बोला "हुज़ूर मा बाप हैं"।

११९—किसी अशराफ़ के घर दो औरतों में ख़ूब लड़ाई हुई। लोगों ने उन्हें जाकर ख़बर दी कि आप के पीछे मकान पर यह आफ़त मची। आपने पूछा कि इस तक़रार में दोनों औरतों में से किसी ने दूसरी को "बदसूरत"। तो नहीं कहा। सबने जवाब दिया कि "नहीं" यह सुनकर आप बोले "फिर कौनसी बात है हम बहुत जल्द झगड़ा निपटा देंगे।

१२०—लार्ड नार्थ जो बहुत मोटे थे एक बार सख़्त बीमार हुए जिस से उनका बदन इतना घुल गया कि बिलकुल पसलियां नज़र आने लगीं। एक बार आपने डाक्टर से हंसकर कहा। "हज़रत मैं आप का शुक्र गुज़ार हूं कि आप की

बदौलत कई पुराने दोस्तों से मुलाकात हुई"। डाक्तर ने पूछा "कौन लोग हुजूर" आपने जवाब दिया "मेरी पसलियां जिनका दर्शन मुझे एक मुद्दत से नहीं हुआ था"

१२१—एक दिल्लगीबाज आदमी से कोई बेवकूफ़ जरासी हंसी की बात पर खफ़ा होकर कहने लगा "तुम अशराफ़ नहीं हो" इस हंसोड़ ने पूछा कि आप अशराफ़ हैं? वह बेवकूफ़ बड़ी तेज़ी से बोला "बेशक"। इस सख्स ने जवाब दिया "तो हम खुदा का शुक्र करते हैं कि हम अशराफ़ नहीं हैं"।

१२२—सरवाट्किन विलियम्सविन एक बार किसी दोस्त से अपने खान्दान के बहुत पुराने होने का ज़िक्र कर रहे थे और मनु तक अपनी बंशावली बयान कर रहे थे कि उन के दोस्त ने कहा "तब तो हज़रत अभी आप कलके पैदा हुए बरसाती जुगनूं हैं"। सरविलियम्स ने घबराकर पूछा "इसके क्या मानी?" इस शख्स ने जवाब दिया "क्यों नहीं—जिन दिनों मैं वेल्स में था मैंने एक खानदान की बंशावली देखी जो बड़े भारी भारी दस ताव कागज़ पर लिखी थी और सातवें तख्त के शुरू में हाशिये पर यह इबारत दर्ज थी कि "इसी ज़माने के करीब दुनिया पैदा हुई"

१२३—हाल में एक नौजवान आदमी किसी वकील के पास एक मुकद्दमे में सलाह लेने के लिये गये और इस तरह कैफ़ीयत बयान करनी शुरू की मेरे बाप फलानी तारीख को मरे और यह वसीयत नामा लिख गये कि—वकील इसकी बात को काट कर बोला "यह किस तरह मुमकिन है हम ने तो अपनी उमर भर में ऐसी बात कभी नहीं सुनी"।

[illegible] " ऐसी बातें तो [illegible]

हैं लेकिन अगर इसमें कुछ कबाहत मालूम होती है तो यह फ़ीस लीजिये और मुकद्दमे को दिल लगाकर सुनिये"। वकील रुपया हाथ में लेकर बोला "अहा हम आपका मतलब समझे, आप की गरज़ यह है कि आपके बाप ने वसीयतनामा लिखा और मर गये"।

१२४—किसी अमीर ने ज़रासी शिकायत के लिये हकीम को बुलाया। हकीम ने आकर नब्ज़ देखी और पूछा "आप को भूख अच्छी तरह लगती है" अमीर ने कहा "हां"। हकीम ने फिर सवाल किया "आपको नींद भरपूर आती है" अमीर ने जवाब दिया "हां" हकीम बोला "तो मैं कोई दवा ऐसी तजवीज़ करता हूं जिससे यह सब बातें जाती रहें"।

१२५—अमेरिका के एक जज ने किसी गवाह की हाज़िरी और हलफ़ लेने के लिये हुक्म दिया। वकीलों ने इत्तिला दी कि वह शख्स बहरा और गूंगा है। जज ने कहा "मुझे इसमें कुछ गरज़ नहीं कि वह बोल सकता है या नहीं। यूनाइटेडस्टेट्स का कानून यह मेरे सामने मौजूद है। इसके मुताबिक़ हर आदमी को अदालत में बोल सकने का हक़ हासिल है और जब तक कि मैं इस अदालत में हूं हर्गिज़ कानून के बखिलाफ़ तामील होने की इज़ाजत न दूंगा जिस से किसी हक़ तलफ़ी हो। जो क़ानून का मनशा है उस पर उस को ज़रूर अमल करना पड़ेगा॥

१२६ एक बेवकूफ इस खयाल से अपने सामने आईना रख

कर सोरहा कि देखूं तो सोते वक्त मेरी सूरत कैसी मालूम होती है॥

१२७—अमेरिका की वर्जिनिया नगर में एक मुकद्दमा क्लापटन साहिब जज के सामने पेश हुआ था जिसका थोड़ा सा हाल हम लिखते हैं।

यह मुकद्दमा बड़े पेंच का था यानी दो आदमियों ने एक दूसरे के ऊपर एक झूठा तूफान खड़ा करने का दावा किया था। वकील दोनों तरफ के बड़े पुराने और मशहूर आदमी थे। जेरीमूडी नाम का एक आदमी दोनों तरफ से गवाह था। जब मुकद्दमा मिसिल पर आया जज साहिब ने दोनों तरफ के वकीलों पूछा "मिस्टर टेलर आप मुस्तैद हैं?" मिस्टर टेलर ने जवाब दिया "अगर जेरीमूडी आ गया हो मैं मुस्तैद हूं" "मिस्टर ली आप तैयार हैं?" मिस्टर ली "हुजूर अगर जेरी मूडी हाजिर हो मैं तैयार खड़ा हूं" जज—"चपरासी जेरी मूडी को हाजिर करो" चपरासी दरवाजे पर गया और तीन बार जेरीमूडी को चिल्लाकर पुकारा। जेरी एकदुबला लंबा सीधे कद का आदमी हाजिरहुआ। कायदे के मुताबिक पहिले पंचलोगों से कसम लीगई फिर गवाह से। इसकेबाद बड़ी आहिस्तगी औरबुजुर्गी के साथ जज ने गवाह से कहा से हरबानी करके जो कुछ तुम इस मुकद्दमे का हाल जानते हो अदालत के सामने बयान करो गवाह ने जवाब दिया साहिब हमने अकसर मुद्दआअलेह को यह कहते सुना है कि मुद्दई बड़ा बदमाश, ठग और झूठा है और सिर्फ यही मौके है कि हमने उमर भरमें इन दोनों को सच बोलते सुना"। इस इज-

[illegible]

लोग एक दूसरे का मुंह देखने लगे, मुद्दई व मुद्दआलेह दोनों घबराये, सिर्फ गवाह (जेरीमूडी) गंभीरता के साथ खड़ा रहा। मुकद्दमा खारिज किया गया जब सब लोग कचहरी से रवानाहुए मुद्दई बोला 'भाई जेरी तुमने बड़ी बेरहमी से दिल्लगी की "।

१२८—एक वकील और एक हकीम साथ चले जाते थे। इन्हें देखकर एक शख्स अपने दोस्त से बोला यह दोनों मिलकर पूरे डाकू का काम करते हैं। दूसरे ने पूछा क्यों इसने जवाब दिया क्योंकि यह या तो रुपया चाहते हैं या जान ।

१२९—किसी महफ़िल में एक ऐसे साहिब की दावत हुई जिनके नाक न थी। घर के मालिक ने अपने लड़के से जो निहायत शरीर था कहा कि ख़बरदार फ़लाने की नाक का ज़िक्र न करना और इह्तियातन् उसे दालान में न आने दिया। जब सब मिह्मान जमा हुए और खाना खाचुके ल-ड़के ने खिड़की में से सर निकाल कर कहा "अब्बा तुम तो कहते थे कि इनकी नाक का ज़िक्र न करना नाक तो हैही नहीं ज़िक्र किसका करना"

१३०—शेरिडन साहिब एक महाजन के कर्ज़दार थे। कोई पैसा टका पल्ले न था। ऐसे वक़्त में महाजन तक़ाज़े को गया। शेरिडन ने कहा "भई अगर इस वक़्त असल मांगते हो तो बेसूद है और अगर सूद चाहते हो तो दरअसल नहीं"। यह सुनकर महाजन घबड़ाया और पूछने लगा "क्यों साहिब आख़िर मेरा रुपया मिलेगा या नहीं"। शेरिडन

ने हंस कर जवाब दिया "भई तुम भी वल्लाह आदमी ही हो ऐसे क्यों घबराये जाते हो—कुंए पर तो हमारा सारा कारखाना चलता है—इनशाअल्लाह तुम्हीं से रुपया लेकर अदा किया जायगा ॥

१२१—एक दिल्लगीबाज़ शख़्स किसी कंजूस के मकान पर गया और देखा कि कमरे में चिराग़ इस तौर पर टिमटिमा रहा है कि उस से सिवाय अंधेरेके और कुछ नहीं सूझ पड़ता। इस ने डिवढ़ीदार को पुकार कर कहा "भई ज़रा रौशनी तो लाना देखें तो यह चिराग़ कैसे जलता है" ॥

१२२—विलायत के एक लड़कियों के स्कूल में किसी साहिब ने इम्तिहान के तौर पर एक लड़की से पूछा कि ईसाई को दो औरतों से शादी करना क्यों मना है। लड़की ने फ़ौरन जवाब दिया कि इनजील में लिखा है कि एक नौकर दो मालिक की ख़िद्मत कभी नहीं कर सक्ता।

१२३—किसी आदमी ने जिसे फ़ीलपा का मर्ज़ था एक बड़े मोटे आदमी को देख कर कहा "तुम कैसे मोटे भद्दे हो" मोटे आदमी ने जवाब दिया "घबराओ मत तुम्हारे भी अच्छी नेव पड़ी है" ॥

१२४—शाहजहां बादशाह के यहां कई एक पोस्तियों ने मिल कर किसी के कहे सुने से अरज़ी दी कि धर्मावतार आप के राज में हम भूखे मरते हैं और सब चैन करते हैं, महाराज से खाने रहने का ठिकाना हो जाय तो हमारा जीव बचे, अरज़ी के पढ़ते ही शाह ने मन्त्री से कहा कि पोस्तियों के खाने रहनेका सैंताव अभी करदो कि ये बिचारे किसी बात का दुख न पावें, आज्ञा होतेही पोस्ती ख़ान: बनवा

[illegible] नगर के पोस्तियों को यहां रहने की आज्ञा दे
उनका दरमाहा कर दिया. यह समाचार सुन सारे नगर के आसकती, कमचोर, काहिल, बिन परिश्रम के रुपये लेने के लालच से वहां आय आय पोस्तियों में नाम लिखा य२ रहने लगे, निदान एक बरस के बीच कई हज़ार पोस्ती गिने गये तब पोस्ती खाने के दारोगा ने मन्त्री से जा कहा, कि महाराज जो इसी प्रकार से दरमाहा मिला जा यगा तो समझ पड़ता है कि कई बरस में सारा नगर पोस्ती हो जायगा. एक ही बरस में कई हजार इकट्ठे हुए हैं. मन्त्री ने जा बादशाह को संदेसा पहुंचाया, बादशाह ने आज्ञा की कि इसे बिचार करके देखो जो ठिक पोस्ती हैं विसे रहने दो और जो भगलिया है विसे निकाल दो, यह आज्ञा होते ही एक राजा के मन्त्री ने सब पोस्तियों को न्योता दिया और बहुत सा पोस्त पिलाया, जब अच्छी भांति माते तब उन्हें खाने को मिठाई दी, और यह कहा कि जो कोई खाने की बिरियां देह मे हाथ न लगावेगा सो हजार रुपये पावेगा, और जो अपना शरीर खुजलावे सो नहीं, निदान मिठाई खाते खाते उनके देह में खुजलाहट हुई तब भगलियों ने तो मारे लोभ के न खुजलाया पर ठीक पोस्ती यह कह खुजलाने लगे कि इसके एक एक घिस्से पर हजार हजार रुपये निछावर हैं ॥

१२५—ओवरलैंडमेल अख़बार में एक बड़े दिल्लगी का हाल देखने में आया। कारनल फ़ेयर ने मलहररावपर अपमान की राह से "आप" के बदले "तुम" लिखने का दोष लगाया था। यह रिपोर्ट छप कर बड़ोदा के और

ओर स्वर्ग से नीचे उन्हें नर्क में डाल दिये उनमें से एक तो मुंह के बल गिरो और दूसरो चूतड़ के बल मुंह के बल गिरन वारो तो मुसलमान भयो और चूतड़ के बल गिरनहारो हिन्दू भयो एक की दृष्टि नीचे को रही और दूसरे को ऊपर को भई याही कारन तें योतिषी लोग सब बातें आकाश की जानत हैं गृहन को हो वो ये बता देंगे औ औवाल की बातें विनते पूछो जिनकी दृष्टि नीचे कों रहो वे अवश्य बतावेंगे ० चौबे की यह जुगुति सुन कर शाहज़ादे ने हंसकर कहा चौबे जी इसमें क्या दलील है कि वो मुंह के बल गिरे और वे चूतड़ के बल; चौबे ने कहा पृथ्वीनाथ प्रत्यक्ष में कहा प्रमाण चाहिये वाही लिये तो भोर उठतेहीं मुसलमान मुंह धोवत हैं और हिंदू जंगल कों जात हैं सो आवदस्त लेत हैं शाहज़ादे ने इस हाज़िर जवाबी को सुन कर चौबे को बहुत सा इनाम दिया और योतिषियों को बहाल रक्खा ॥

१२८—एक क़ारूं पातशाह था वो बड़ा ही लालची था उसने अपनी रैयत पर इतने किसीम के कर इजरा किये कि जिस के बाइस से तमाम दुनियां दानों बिना मरने लगी तो भी उसे दौलत के खेंचने से संतोष न हुआ निदान उसने अपने बाप दादों के वक़्त का कोई पुराना मंत्री था उसे बुला के कहा कि तुम बतलावो दौलत अब किस मुक़ाम में बाक़ी रही है उसने हाथ जोड़कर कहा जहांपनाह दौलत दुनियां की कुल आप के खज़ाने में आ चुकी है संसार खुख हो गया अब कहीं दौलत बाक़ी नहीं रही है इस पर भी उस असंतोषी पातशाह ने उस से कहा कि तूं बड़ा पुराना है

किसी जगह गाड़ी धरी किसी [illegible] से भी रुपया नहीं तो तेरी जान मुफ़्त जायगी यह सुन मंत्री बोला कि जहांप-नाह और तो मेरी जान में कहीं दौलत नहीं है लेकिन आप के दादा के कब्र में लाख अशरफ़ियां दफन के वक़्त धरी गई हैं यह मैं जानता हूं यह सुनते ही हुक्म हुआ कि मेरी पादशाहत में जितने कब्र हैं सब खोद कर जिस क़दर दौ-लत मिले ला दाखिल करो इस हुक्म के पाते ही लाखहा बेलदार छूटे जितनी कब्रें थीं ढहाढहा कर करोरहां रुपैये की दौलत खजाने में ला दाखिल की पादशाह का यह हाल सुन कर एक फक़ीर किसी तरफ से चला आया और उसके महल के सामने कुछ दूर जा डेरा किया हर रोज़ उसका यही काम था कि जहां जंगल में ईंटें पड़ी पाता था लाकर अपने तकिये के सामने चुन दिया करता था कुछ दिनों में उन ईंटों का एक बड़ा टीला लग गया एक दिन पातशाह सुबह के वक़्त झरोखे में खड़ा दुरबीन से देखता था कि एक फकीर ईंटें चुन रहा है देख कर वजीर से पूछा कि यह कौन शख्स है कि जिसने इस कदर ईंटें जमा की हैं वजीर बोला खोदावंद एक फकीर बरस दिन से टिका हुआ है और जं-गल से ला ला कर ईंटें जमा करता है कोई मने करता है तो मारने दौड़ता है यह सुन पातशाह उस वक़्त तो चुप ही रहा लेकिन रात को अकेला फकीर के पास जा सलाम कर बैठ गया फकीर ने पूछा कि तू कौन है पातशाह हाथ जोड़ कर बोला कि पीरमुरशिद मैं कारूं नाम आप का ताबेदार हूं फकीर बोला बाबा तूं क्यों आया है मेरे पास तो कुछ दौलत नहीं है पातशाह बोला हुजूर मुझे एक बात का संदेह

हुआ इसलिये मैं आया हूं फकीर ने कहा कहो, पातशाह बोला कि आपने यह ईंटें जमा की हैं सो क्यों?फकीर बोला बाबा जिस लिये तूंने दौलत इकट्ठी की है उसी लिये मैंने ईंटें जमा की हैं पातशाह बोला पीरमुरशिद ईंट से और दौलत से क्या निस्बत फकीर ने जवाब दिया कि बाबा मरने पर दोनों बराबर हैं न तूं छाती पर दौलत ले जायगा न मैं ईंटें यह खुदा की चीजें हैं सब यहां की यहांहीं धरी रह जावेंगी तूं दौलत देख कर संतोष करता है मैं ईंटें देख कर यह सुनतेही पातशाह को एक कोड़ा सा लगा और फकीर के पावों पर गिरपड़ा बोला कि पीर मुरशिद आप ने सच कहा अब मुझे क्या करना मुनासिब है फकीर बोला कि जितने कंगाल हैं सबों को निहाल कर दे और मसजीदें बनवा सदावरत लगवा दे और खुदा को याद करता रह यह कह कर फकीर ने तो जङ्गलकी राह ली और कारूं ने जाकर तमाम दौलत अपनी खैरात कर और मसजीदें सरायें और हर किसम की खैरातें कर आप भी फकीर होकर जङ्गल को चला गया ॥

१३९—एक शख्स ने किसी मशहूर लुटेरे के पास जाकर कि मुझे नौकर रख लो, लुटेरे ने पूछा कि तूने कहां कहां नौकरी की है, उसने जवाब दिया कि दो बरस तक एक वकील के पास और एक बरस पुलीस में रहा हूं, लुटेरे ने कहा तब तो बेशक तू मेरे नौकरी के लाइक़ है क्योंकि तूने यह दोनों नौकरियां ऐसी की हैं कि गोया इतनी मुद्दत तक हमारी ही गरोह में रहा ॥

१४०—एक हकीम साहिब अपने एक शागिर्द मरीज़ से

[illegible]
तबीअत कैसी रही और खाना इश्तिहा के साथ खाया या नहीं. मरीज़ ने जवाब दिया "साहिब तबीअत तो अच्छी रही लेकिन खाना इश्तिहा के साथ नहीं बल्कि पुदीने की चटनी के साथ खाया"।

१४१—एक छोटे लड़के की जूतियां खो गईं, तमाम घर ढूंढ डाला कहीं पता न लगा, तब वह अपने बाप के कुतुबखाने में जाकर एक 'कोष' के वरक़ उलटने लगा। बापने पूछा "बेटा इसमें क्या देखते हो ?" लड़का बोला "अब्बा अपनी जूतियां ढूंढता हूं"। बाप ने हंस कर कहा अरे पागल किताब के अन्दर तेरी जूतियां कहां से आईं जो तू ढूंढ़ता है ?" लड़के ने बड़े भोलेपन के साथ जवाब दिया "अब्बा तुमको जिस चीज़ की तलाश होती है वह इसीमें से निकल आती है तो क्या मेरी जूतियां न मिलेंगी ?"

१४२—एक भोली लड़की को प्रथमहीं गर्भ हुआ एक दिन अपनी ननद जिठानी से कहने लगी कि मैंने बालक का जन्म होते कभी नहीं देखा है सो जब बालक का जन्म हो तब मुझे जगा देना, वे सब हंस पड़ीं और कहने लगीं अरी तू बड़ी मूर्ख है जब तेरे सन्तान होगा तो तही सबको जगा देगी ॥

१४३—एक अफीमची नित्य एक कुलड़े में अपने वास्ते और एक में अपनी स्त्री के वास्ते दूध लाया करता एक दिन अफीमची का दूध बिल्ली पी गई तो वह चिल्ला कर स्त्री से कहने लगा कि अरी ! आज हम क्या पियेंगे स्त्री ने जो ऊपर ओर से पुकार कर कहा "आज तुम मेराही दूध पी लेना" यह सुन कर सब घर वाले हंसते हंसते २ लोट गये ॥

१४४—एक सुकवि किसी धनिक के समीप द्रव्य पाने की आकांक्षा करके गया और जाकर उसकी बहुत कुछ प्रशंसा और स्तुति की पर एक वराटिका भी उस कवि के हस्तगत न हुई किन्तु उसी समय उस (धनिक) के समीप एक और उदार शीलदाता बैठा हुआ था उससे न रहा गया और यद्यपि वह दूसरे के स्थान में बैठे थे तथापि अपने जेब में से पञ्च मुद्रा निकाल उन्हों ने कवि के अर्पण किया, इसपर परम सुजान कवि शिरोमणि ने उत्तम रीति के साथ कि जिसमें प्रगट प्रशंसा तो धनिक की और वास्तव में उस दाता की सूचित होती थी श्लेषवद्ध कथनारम्भ किया कि आप (उदार शील) तो महाशय बड़े लोभी दृष्टि पड़ते हैं, देखिये तो हमारे श्रीपति (धनिक) कैसे उदार हैं, यदि हम इनके दान शीलता के प्रभाव को निरूपण किया चाहें तो सर्वथा अशक्य है, क्योंकि यद्यपि इनके पास असंख्य द्रव्य है तथापि मरणानन्तर इनको अपने साथ एक बराटिका तक ले जाने की उत्कंठा नहीं है और न साथ ले जावेंगे, सब यहीं [संसार में] छोड़ जावेंगे चाहै उसे जो भोगे, और एक आप हैं कि मृत्यु के अनन्तर भी अपनी लक्ष्मि अपने संग लेते जावेंगे, भला अब आपही निर्णय कीजिये कि आप से अधिक दूसरा लक्ष्मावद्ध और धनिक (सेठ) सदृश दाता कौन होगा। यथा॥

अदातापुरुषस्त्यागी धनंत्यक्त्वैवगच्छति।
दातारंकृपणंमन्ये मृतेप्यर्थंनमुंचति॥

अन्तत: लज्जित होकर उस धनवान ने भी अपनी पूंजी खोली और उस कवि को प्रचुर द्रव्य दे विदा किया। ता-

[illegible] पावेगा और [illegible]
[illegible] न पावेगा ॥

१४५—किसी मनुष्य ने एक के हाथ अपना कुआं बेचा जब खरीदार ने पानी भरना चाहा तो बेचने वाले ने रोका कि मैंने कुआं बेचा है न कि उसके साथ पानी भी । अन्तत: हाकिम तक नौबत पहुंची हाकिम ने निर्णयार्थ यह बात निकाली कि जब कुआं खरीदार का हो गया तो तुम को दूसरे के कूप में अपना जल रखने का अधिकार कहां से होगा, यदि उसके कुएं मे तुम जलदी जल न निकलवा लोगे तो तुम को दण्ड दिया जावेगा ॥ अन्त में पानी का दावा करनेवाला लाचार हुआ और अपने दावे से हाथ धो पानी छोड़ बैठा ॥

१४६—सुकरात हकीम से एक दिन एक छैल चिकनियां ने पूछा कि गुरू मनुष्य को कैसे वस्त्र पहनने चाहिये(मनमें सोचता हुआ कि मेरे भड़कीले कपड़ों की प्रशंसा करेंगे) सुकरात ने उत्तर दिया कि ऐसे कपड़े पहनने चाहिए कि जिन पर रस्ते चलने वालों का ध्यान न पड़े (अर्थात् साधारण)

१४७—एक मकान के बीच ५ । ७ आदमी बैठे आपस में डींग मारते थे, कोई कहता था मैंने ४ घाव खाये, और कोई कहता था पांच, ग़रज़ हर एक ने अपने २ लड़ने और घाव खाने का अहवाल बयान किया । एक बूढ़ा ठठोल उनके पास बैठा था बोला कि मियां जवानी में हम भी सैकड़ों लड़ाइयां लड़ीं और हमने भी हज़ारो ज़ख्म खाये, ऐसे२ कि कहीं बदन पर तिल धरने की जगह बाक़ी नहीं रह गई थी हमारे आगे अब कोई क्या लड़ेगा और क्या घायल होगा।

इतनी बात के सुनते ही उनमें से एक जवान खफा हो कर बोला, बड़े मियां कपड़े उतारो, देखूं तो भला तुमने कहां घाव खाये हैं, वह हंसके बोला, मियां गबरू न वह ज़माना रहा न वह दिन रहे न वह जवानी रही न वह तयारी रही न वह जिस्म रहा अब क्या देखोगे इतना कह चम्पत हुआ ॥

१४८—एक दिन राजा बीर बिक्रमाजीत के यहां चार जने एक साथ चोरी के विषय में पकड़े गये राजा ने उनमें से एक को पास बुला इतना कह छोड़ दिया कि तुम्हारे जोग यह काम न था, और दूसरे को पांच चार गालियां दे निकाल दिया, तीसरे को दस बीस धौल जूतियां लगवा धक्के दिलवा निकलवा दिया, और चौथे को नाक और कान कटवा काला मुंह करवा गधे पर चढ़वा नगर से बाहर करवाया ० यह न्याव देख प्रत्येक दरबारी एक एक का मुहं देखने लगा ० उस काल राजा ने उनसे पूछा कि तुम्हारे मन में क्या है सो कहो ० उन्हों ने हाथ जोड़ कर कहा धर्म्मावतार ! आप ने न्याव तो समझ होके किया होगा पर इसका भेद कुछ हम पर न खुला ० राजा ने हंस के कहा कि तुम इन चारों के पीछे लोग लगा दो कि ये जाके क्या करते हैं इसका संदेसा लावें ० उन्होंने वही किया ० तीसरे दिन जब लोग समाचार ले राजा के सोहीं आ उपस्थित हुए तब राजा ने देख कर कहा कि उनके समाचार लाए ? उत्तर दिया हां पृथीनाथ लाये ० आज्ञा को कहो ० वे दण्डवत कर हाथ जोड़ बोले कि धर्मावतार जिसे आप ने यह कह छोड़ दिया था कि तुम्हारे जोग यह काम नहीं था वह तो जाते ही विष

था मर गया ० और [illegible] छुड़ाया था [illegible]
गर छोड़ कर चला गया ० और जो मार खाके छूटा है सो बीस दिन से घर के बाहर नहीं निकला और महाराज जिसकी नाक और कान काटे गए तिसका वृत्तान्त सुनिये कि बाट में गधे पर आरूढ़ चला जाता था और दिखवैये भी दो चार सौ चारो ओर से धिक्कार देते हुए जाते थे और सोंहीं से उसको जोरू आई उन्ने उसे पास बुलाकर सबके देखते कहा कि तू घर जाकर न्हाने का पानी तुरन्त ताता कर रख थोड़ा नगर फिरना रहा है अभी फिर कर इन दुष्टों के हाथ से छूट चला आता हूं ० इतनी बात के सुनते ही राजा ने उन लोगों से कहा जिन्हों ने कहा था कि धर्म्मावतार हम ने इस न्याव का भेद न जाना कहो अब तो समझे ? उन्हीं ने हाथ जोड़ कर कहा कि पृथ्वीनाथ आपका न्याव आपही से बनै दूसरे की क्या सामर्थ जो इसमें दम मारे, यह वही है जो किसी ने कहा है ० रागी बागी पारखी नारी और न्याव, इन पांचों के गुरु हैं पर उपजे अंग सुभाव ॥

१४९—एक कायथ ने गाने बजाने के संसर्ग में किसी गवैये से यह कविता सुनी इश्क क्या शै है किसी कामिल से पूछा चाहिए ० तभी से वह सिद्ध के ढूंढ़ ढांढ़ में था कि एक गोसांई इसे मिला ० इसने दण्डवत कर उससे पूछा कि महाराज इश्क क्या बस्तु है मुझे दया कर बताइये ० इसकी बात सुन उसने कहा बाबा मैंने तो अपने गुरुदेव के मुख से यों सुना है ० इश्क उसी की झलक है जो सूरज की धूप। जहां इश्क तहां आप है। कादिर नादिर रूप ॥

१५०—एक सेठ एक दिन अपनी सेठानी से कहने लगा इमें

एक बड़ी चिन्ता है कि हमारे पास अब इतना धन है कि यदि हमारी सन्तान केवल इतनाही खर्च रक्खे जितना अब हमारा खर्च है और एक कौड़ी न कमावे तो सात पीढ़ी तक सुन्दर प्रकार खर्च को है, परन्तु आगे के लिये कुछ नहीं है सो हमें सोच है कि आठवीं पीढ़ी वाले क्या करेंगे ॰ सिठानी उनकी मूर्खता पर हंस कर कहने लगी कि यह कौन चिन्ता है हम तनिक में इसे दूर कर देंगी, बाज़ार से कुछ लड्डू मंगा कर सिठानी ने कहा कि तुम्हारे मुहल्ले में एक फलाना बड़ा क्रियावान् तपस्वी और सन्तोषी ब्राह्मण रहता है उसे जाकर अपने हाथ से इन लड्डू को दे आओ। सेठ लड्डू लेकर उसके द्वारा पर आन कर पुकारा कि महाराज यह ले जाइये ब्राह्मणी द्वार पर आई और लड्डू बिना लिये लौट गई और पतिसे कहने लगी कि आप की आज्ञा हो तो ले लूं ॰ ब्राह्मण ने पूछा कि आज भोजन के लिये घरमें कुछ है वा नहीं ब्राह्मणि ने कहा स्वामी आज के लिये तो है परन्तु कल के लिये कुछ नहीं है, ब्राह्मण ने कहा तो सेठ से कह दो कि हम न लेंगे ॰ कल का ईश्वर दाता है, यह देख कर सेठके ज्ञान नेत्र खुल गये और अपनी को धिक्कारने लगा कि ह! ह! मैं ऐसा असन्तोषी हूं और यह ऐसे विश्वम्भर पर भरोसा करने वाले कि आज है कल वह फिर देगा ॰ वाह! वाह! धन्य है।

१५१—एक अमीर मरने के समीप था कोई मुल्ला उसके पास गया और कहा कि अब आप कोई दम के मिहमान ने इस समय उचित है कि दो हज़ार रुपया मस्जिद बनाने के लिये मुझे दो, तुमको बड़ा पुण्य होगा, उस समय वायु का ज़ोर

[illegible]
हिल गई, मुल्ला उसके बेटे से जो उस बेला वहीं वर्तमान था कहने लगा देखो तुम्हारे बाबाजान ने मस्तक हिलाने के संकेत से तुम्हें आज्ञा दी है कि मुझे २०००) रु० लाओ । उसने अपने बाप की ओर मुंह करके कहा कि आप कहैं तो इसको एक लात दूं, संयोग वश उसकी गर्दन फिर हिल गई और उसने मुल्ला जी को पीट कर निकाल दिया ॥

१५२—एक ने फौलाद खां हबशी से पूछा कि तुम्हारा रंग ऐसा काला क्योंकर होगया उसने जवाब दिया इसलिये कि मैं ग्रहण के दिन पैदा हुआ था ॥

१५३—एक अमीर ने किसी कवि को खाना खाने के लिये बुलाया, जब वह खा पी चुका अमीर ने कहा तुम अपना सितार क्यों नहीं लाये हो, उसने जवाब दिया साहिब मेरा सितार खाना नहीं खाता जो मैं उसे साथ लाता ॥

१५४—एक मनुष्य कहता फिरता था कि मेरी माता और मैं बड़ा योतिषी हूं, लोगों ने कहा क्योंकर मालूम हुआ, उसने उत्तर दिया कि जब कभी घटा छाती है तो हम दोनों में से एक कहता है कि वर्षा होगी और दूसरा कहता है कि आज वृष्टि न होगी, अस्तु: मेरा कहना होता है या मेरी मा का ॥

१५५—दो चोर चोरी करने निकले एक ने किसी की गाय चोराई और दूसरा कहीं से घड़ी उड़ा लाया, राहमें दोनों को भेंट हुई गाय के चोर ने घड़ी के चोर से पूछा कि इस समय के बजे हैं, उसने कहा दूहने का समय है ॥

१५६—एक हबशी कहीं चला जाता था किसी आदमी का

दर्पण राह में गिरा पाया, उसने जो उठा कर देखा तो उसमें उसका स्वरूप जो साक्षात् काग भुशुण्ड का था यथार्थ दृष्टि पड़ा तब तो आप उस पर रुष्ट हो दर्पण को भूमि पर पटक दिया और कहा कि ऐसे न होते तो काहि को पड़े रहते ॥

१५७—एक गवांर जिमीदार की स्त्री गर्भिणी थी संजोग कर के एक पण्डित जी उसके गांव में आ निकले और कथा कहने लगे॰ एक दिन पण्डितजी की कथा सुन कर ठाकुर साहब को चित्त से विश्वास हो गया कि जो वह कहेंगे सो बहुत ठीक कहेंगे ॰ यह सोच कर पूछने लगा कि महाराज मेरी स्त्री के लड़का होगा या लड़की पण्डित जी ने मन में यह सोच कर कि हमें यहां अभी और ठहरना है और यदि हमारा वचन पूरा न उतरा तो इन गंवारों के चित्त से हमारा विश्वास हट जाय गा और यथोचित पूजा न चढ़ेगी॰ इस कारण एक हिकमत सोची जिस में लड़का अथवा लड़की के जन्म होने पर ठाकुर साहब को भली भांति समझा लेंगे ॰ यह विचार कर पण्डित जी कहने लगे कि भाई हम ऐसे न बतावेंगे हम कागज लिख के तुम्हारे पास रख देंगे जब कुछ होगा तो कागज निकाल कर पढ़वा लेना यदि हमारा वचन सत्य निकले तो हमें मानना ॰ सब ने कहा बहुत अच्छा ॰ पण्डित जी ने एक कागज में यह लिख कर कि "बेटा न बेटी" उन्हें सौंप दिया ॰ और मन में विचार किया कि यदि बेटा होगा तो समझा देंगे कि भाई देख लो हम ने पहिलेही लिख दिया था " बेटा—न बेटी और यदि बेटी होगी तो समझा देंगे कि भाई हमारा पहिले से

ही लिखा रक्खा है बेटा न—बेटी । ० और यदि दैवात कुछ और ही उपद्रव हो और बेटा बेटी कुछ न हो तो साफ कह देंगे कि भाई इस में पहिले ही लिख दिया था कि "बेटा न बेटी" कुछ न होगा ० अन्त को जब उस जमीदार के सन्तान हुआ तो अवधूत जी ने गवांरों को समझाय कर अपनी सिहाई फैला कर मन माने पुजवाया ॥

१५८—ऊधो नाम करके एक जालिया मनुष्य एक गांव से दूर से गांव ऋण चकाढ़र कर भागता फिरता ० जब एक गांव में बसने को गया तो वहांके जमीदार ने उसे बुला कर कहा कि हमने सुना है कि तुम गांव गांव माल मारते फिरते हो और यहां भी ऐसा करोगे इसका कारण हम तुम्हें अपने गांव में न ठहरने देंगे ० ऊधोने जब बड़ी अधीनताई से निवेदन किया तो अन्त को जमीनदार ने इस शर्त पर उसे रहने का हुकुम दिया कि जब तुम गांव के बाहर जाना तो हम सबको जताकर जाना ० जो बेजताये जाओगे तो चोरके समान तुम्हारा दण्ड होगा ० ऊधोने मान लिया कुछ समय जब रहते २ होगया और लोगोंसे जान पहचान हो गई तब जहां तक बना सबसे ऋण लिया और फिर चलने की तैयारी की ० होली के तिवहार पर उसने कहा कि मैं स्वांग अच्छा बनता हूं ० सबने कहा बनो ० ऊधो कन्धों पर काला पीला सूत डाल कर और शरीर रङ्ग कर स्वांग बना और दो चार बार बाहर जाकर लौट कर और नाच कर अन्तको यह दोहा पढ़ कर रफू चक्कर हुआ अपनी स्त्री तारा और लड़के को पहिलेही रवाने कर चुका था ॥

दोहा। तारा गई सरेशाम की, संग बंसता पूत ।

बाद कुछ दिन बाद जमींदार ने उसे पकड़ा और कहा कि तुम वे कहे क्यों भाग आया तब उसने याद दिलाई कि फलाने २ समय में तुम सबको जता के आया हूं वे हंस के कायल हुए।

१५८—किसी बादशाह ने अपने शत्रु के विपक्ष में कुछ सेना भेजी, दैवात् उसकी पराजय हुई, एक मनुष्य ने बादशाह के समीप आकर समाचार सुनाया कि आपकी सेना ने वि-जय पाई, जिसके सुनने से वह अत्यन्त प्रसन्न हुआ, किन्तु दो दिवस के उपरान्त फिर उसको हार का ठीक २ वृत्तान्त मिला, बादशाह इससे अत्यन्त रुष्ट हुआ, और उस मनुष्य को कि जिसने पहिले शुभ सम्वाद सुनाया था दण्ड देना चाहा, उसने हस्ताञ्जलि बद्ध होकर प्रार्थना किया कि मैं दण्ड के योग्य नहीं हूं, क्योंकि मैंने आपको दो दिन लों प्र-सन्न रक्खा फिर आप मुझे व्यर्थ अप्रसन्न और खिन्न क्यों कर ते हैं, बादशाह इसके इस कहावत पर हंसा और उसे छोड़ दिया॥

१६०—एक चोर किसी आदमीके यहां घोड़ा चोराने के लिये गया था दैव संयोग से पकड़ा गया, मालिक ने चोरसे कहा कि जो तू मुझे घोड़ा चोराने की हिकमत बतला दे तो मैं तुझे अभी इसी दम छोड़ दूं, चोरने इसे मंजूर किया और घोड़े के नज़दीक जाकर पहिले उसकी पिछाड़ी खोली ति सके उपरान्त लगाम चढ़ा और सवार होकर एक चाबुक जड़ी, और चलाते वक्त झुक कर सलाम करता हुआ यह कह

कार कि देखिये घोड़ा ... यही हिकमत है, रफू-चकर हुआ बारहां लोगों ने पीछा किया, मगर फिर कौन पाता है, ठीक है "बरिआर चोर सेंध में गावे" ॥

१६१—किसी मुन्शी के पास एक बाहर का सय्यद चाकर हुआ। एक दिन उसका खिदमतगार उपस्थित न था उसने इससे कहा कि आज मेरा टहलुवा उपस्थित नहीं है तुम मेरे साथ दरबार चलो कहा बहुत अच्छा। इसने उसे चार पैसे देके कहा कि सारे दिन दरबार में रहना होगा तुम इनके पान लेके चार गिलौरी लगवा लाओ, जब मैं कैन करूं तब दो दिओ दो जो मैं आगे जाता हूं तुम लेकर पीछे आओ यह तो दरबार में जा बैठा और उसने अपने मन में विचार किया कि चार पैसे के पान से तो मियां का पेट न भरेगा इससे भला है कि चार पैसे की चार रोटी ले चलूं जो मियां पेट भर खायगा। यह मनमें ठान चार पैसेकी चार रोटी ले अंगोछे में बांध कांख में दबा मियां के ... जा ... हुआ। मुंशी ने इसे देखतेही ज्योंसैन कर हाथ बढ़ाया उसने अंगोछे से दो रोटी खोल उसके हाथ दी। यह देखतेही हक्का बक्का हो लगा इसकी ओर देखने। उसके होश बिगड़े देख यह बोला औंड़ी तरह दीदे फाड़ २ देखै सेकी मैं नहीं खाई दो और धरी हैं। यह सुन वह लज्जित हो अपने मन में कहने लगा कि किसी ने सच कहा है कि जनाड़ी का सौदा बाहर बाट ॥

१[illegible]२—एक बड़ा महाजन किसी सिद्ध उदासी के यहां जाकर गुरुमुख हुआ और गुरु की सेवा में आठो पहर उपस्थित रहने लगा। परमेश्वर का चाहा छः महीने के बीच उसका ऐसा

[illegible]
[illegible]

कहावत नहीं सुनी जो इतना सोच करता है, अहलदार करता की बातें क्या न करन्ता क्या न करे. हाथी मार गर्द में डाले अदना के सिर छत्र धरे; रीती भरे भरी ढुलकावे मिहर करे तो फेर भरे ।

१६३—एक सिपाही बड़ा ज्वारी था जब जीतता तब मारे आनन्द के ऐसा अज्ञान हो जाता कि कोई उसके पहरने के कपड़े उतार लेता तो भी उसे न जान पड़ता॰ इसी वासते हरदम चार पांच लुच्चे हर घड़ी उसके साथ लगे रहते और जब सुभीता पाते तब उसका माल उड़ाते एक दिन वह किसी पराई ठांव जुवा खेलने को गया और लगा जीत जीत रुपए अपने आगेसे पीछे खिसकाने और उसके साथके लुच्चे लगे उड़ाने॰ इसमें किसी ने देख कर एकसे कहा कि देखो किसी चोड़ी कोई उड़ावे॰ दूसरे ने उत्तर दिया क्या तुमने यह ावत नहीं सुनी जो अचरज करते हो। अन्धी पीसे कुत्ता खाय, पापी का माल अकारथ जाय ॥

१६४—एक बेर अकबरशाह की सवारी निकली, साथ में बीरबल उपस्थित थे कोई स्त्री घाट में थाली मांज रही थी बादशाह ने देखकर ब्रजभाषा में पूछा कि बीरबल "या थाली काकी है," इस श्लेषबद्ध पद के सुनते ही चट से बीरबल ने उत्तर दिया कि या थाली पीतर की है, इस प्रत्युत्तर पर अकबरशाह बड़े प्रसन्न हुए और बहुत कुछ पारितोषिक दिया॰

[illegible]

[illegible] लगा रहा था [illegible] इसी बीच में ४ पथिक उस मार्ग से आये और उसी वृक्ष के नीचे आ बैठे. उनमें से एक ने कहा कि आज है क्या जो आप द्यूत खेलने नहीं गये और इस घोर बन में सवांग बना बैठे हो. जान पड़ता है कि कुछ हार गये हो. योगी बोला हां बाबा तूं सच कहता है, फिर दूसरे ने कहा कि तू तो कल मद्य पान कर उन्मत्त हो इधर घूमता फिरता था आज काहे को मकर से यहां आ बैठा है, उसने फिर उत्तर दिया हां बाबा सच कहता है, तीसरे ने कहा तूने इस पथ में बहुत से पथिक समुदाय को नष्ट किये हैं और किस तार से यहां बैठा है, उसपर भी उसने यही कही "हां बाबा सच कहता है" चौथे ने कहा कि महाराज आप भगवान के निज भक्तों में हो कुछ मेरी अवस्था पर भी दया कीजो. उसमे भी यही कहा हां बाबा सच कहता है, अन्त को यह कह कर सब लोग चले गये. तब एक और यात्री जो वहीं उसके निकट बैठा हुआ सबों की बात सुन रहा था उठ कर साधु के पास आया और बिनती पूर्वक कहने लगा कि प्रभु आप ने चार मनुष्यों के ४ प्रश्नों का एकही उत्तर दिया कि इसका कारण क्या है उसने इससे भी यही कहा "हां बाबा सच कहता है". पर यह हाथ जोड़कर बोला कि हे कृपासिंधु मैं उनके सा नहीं हूं जो मुझे भी बहकादीगे और मैं वहम कर चला जाऊं अब बिना समझे आप का पिण्ड नहीं छोड़ने वाला हूं इस को सुन योगी ने कहा कि बाबा यह संसार दर्पण है जिस कि जैसी प्रकृति होती है वैसीही दीख पड़ती है अर्थात

जो जैसा होता है अपने स[illegible] को भी वैसही समझता है • उस लोगों के कहने [illegible] बिगड़ गया, दास तो ज्यों का त्यों बैठा है यह सुन उसने दंडवत कर अपने घर की राह ली •

१६६—एक दफ़े का ज़िक्र है कि किसी अमीर ने अपने दरबार में ज़मीन पर एक लकीर खींची और सब से कहा कि इसको बेमिटाये छोटा करो। तमाम लोग हैरान रहे लेकिन एक नौजवान तेज़तबीयत आदमी ने जो मौजूद था फ़ौरन् उसकी बग़ल में एक उससे बड़ी लकीर खींच दी और पहली लकीर को न छेड़ा। सब लोग देखकर खुश हुए और मालूम किया कि बेशक पहली लकीर छोटी हो गई ॥

१६७—एक बड़ा क़र्ज़दार आदमी रोनी सूरत बनाये हुए चला जाता था। राह में एक दोस्त मिला और पूछा कि तुम क्यों इतने उदास हो? उस शख़्स ने जवाब दिया "अफ़सोस कि मेरा [illegible] बिगड़ा चाहता है"। [illegible] इस है का दीवा[illegible] तो इस में तुम्हारे रोने की कौनसी बात रोएं तुम्हारे क़र्ज़ख़्वाह जिनका रुपया मारा जायगा"।

१६८—किसी शख़्स ने एक अख़बार में अपने खेत के बेचने का इश्तिहार दिया जिसमें उसके मौक़े की ख़ूबसूरती, ज़मीन की ज़रखेज़ी और हवा की उम्दगी वग़ैरह की सबसे बड़ी तारीफ़ यह लिखी "इस ज़मीन के आस पास पन्द्रह मील तक कोई वकील या मुख़्तार नहीं रहता है"॥

१६९—नेक सलाह को सुनना और उस पर अमल करना इस से बढ़कर दुनिया में दूसरा कड़वा प्याला नहीं है। जो

शख़्स किसी को नेक सलाह देता है वह यों ऐसा मालूम
होता है कि गोया उसकी अक़्ल को बेवक़ूफ़ी [illegible] है
और उस से बच्चे या बेवकूफ़ की तरह समझता है। उसकी
नसीहत ऐसी मालूम होती है जैसे कोई लपेट के साथ गा-
लियां दे रहा हो और उसका नेक नीयती के साथ ऐसे
मौक़े पर कोशिश करना शेख़ी और गुस्ताख़ी ख़याल किया
जाता है। इसका असल सबब यह है कि जो शख़्स सलाह
देने को आता है पहले अपनी हुकूमत दिखलाता है और
इस हुकूमत दिखलाने का दूसरा कोई सबब नहीं है सिवाय
इस के कि वह अपने सामने उसके चाल चलन या समझ में
कोई बुराई देखता है। पस इन सब वजहों से दूसरे की मर्ज़ी
के मुआफ़िक़ नेक सलाह देने के इल्म से बढ़कर कोई मुश्-
किल काम नहीं है। इस इल्म के जानने वाले उस्तादों ने
अपनी अपनी तद्बीर अलग अलग बयान की है जिस से
यह ज़हर का प्याला किसी तरह गले के नीचे उतर जाय
किसी की तो यह राय है कि उम्दा चुने हुए लफ़्ज़ों का
असर बहुत जल्द होता है, कोई यह कहता है कि नसीहत
पद्य में होने से जल्द असर करती है, किसी का यह ख़-
याल है कि नोक झोंक के जुम्लों से बड़ा मतलब निकलता
है, और बाज़े ऐसे मौक़े पर छोटी छोटी मसल कहना पसन्द
करते हैं। लेकिन हमारी राय में इन सब तद्बीरों से ज़ियादा
उम्दा और दिल पर असर करने वाली तद्बीर क़िस्से का
कहना है। अगर ग़ौर करके देखें तो इस तौर से सिखाना
यानी नसीहत देना सब से बढ़ कर है क्योंकि सुनने वाले
को किसी तरह से बुरा नहीं लग सकता और इस में और.

किसी तरह का ऐब भी [illegible] नहीं पड़ता। क़िस्सा पढ़ने से ऐसा मालूम होता है जैसे कोई अपनी नसीहत छापकर रहा हो। दूसरे का बनाया हुआ तो क़िस्सा पढ़ते हैं और उससे जो अच्छी बातें हासिल करते हैं वह ख़ास अपने निकाले हुए नतीजे मालूम होते हैं। नेकी का असर यहां आप से आप ढके पर्दे होता है। हमारा मतलब इस कहनेसे यह है कि इस में आदमी यहां तक डूब जाता है कि उसे मालूम होता है कि वह ख़ुद [illegible] कररहा है न कि दूसरे की तदबीर पर चल रहा है और दूसरे से सलाह लेने में जो सब बुराइयां आपड़ती हैं वह उसे एक भी नहीं मालूम होतीं।

सिवाय इसके अगर आदमी की ख़ासीयत का इम-तिहान लें तो साफ़ मालूम होगा कि उसका दिल कभी इ-तना ख़ुश नहीं होता जितना कि जब वह कोई काम ख़ुद करे और इसमें उसको अपनी ताक़त और लियाक़त का अ-न्दाज़ मिले। यह [illegible] उसका क़िस्सा पढ़ने से बख़ूबी पूरा होता है क्योंकि इस क़िस्म की तहरीरों में पढ़नेवाले ख़ुद आधे काम का करने वाला हो जाता है, बराबर वह एक बात को दूसरी से और दूसरी को तीसरी से मिलाकर नतीजा निकालने में मशग़ूल रहता है और हर एक नयी बात उसको ऐसी मालूम होती है गोया वह उसी की नि-काली हुई है यानी इस हालत में पढ़ने वाला गोया बनाने वाले के क़ालिब में आजाता है।

इस क़िस्म से ढके पर्दे फेर के साथ सलाह देना ऐसी उम्दा तदबीर है कि अगले ज़माने के आलिम लोग बाद-शाहों को क़िस्सा कहकर अक्सर नसीहत दियाकरते थे

और उसको [illegible] बहुत ज़रूर [illegible]। जैसा कि [illegible]-
कूमत में राजनीति की किताब से ज़ाहिर है। इस बात
को मज़बूती के लिये हम एक मिसाल लिखते हैं। कहते हैं
कि सुल्तान मुहम्मद ईरान के बादशाह ने ज़ुल्म और ल-
ड़ाई से अपने तमाम मुल्क को वीरानी और बरबादी में
छा दिया था और क़रीब आधे ईरान को उजाड़ करडाला
इस बादशाह का वज़ीर अक्सर यह बहाना किया करता
था कि मैंने एक फ़क़ीर से चिड़ियों की बोली समझने का
इल्म सीखा है और ऐसा कोई परन्द नहीं है जो अपनी
ज़बान खोले और मैं उसका मतलब न समझूं। एक दिन
शाम के वक्त, वह बादशाह के साथ शिकार से वापस आता
था कि बादशाह और वज़ीर की नज़र दो उल्लू पर पड़ी
जो किसी खंडर के पास एक दरख़्त पर बैठे थे। बादशाह
ने कहा मैं जानना चाहता हूं कि यह दोनों उल्लू आपसमें
क्या बातें कर रहे हैं, तुम जाकर इनकी बातोंको सुनो और
उसका खुलासा हाल मुझ से आकर बयान करो कि
दरख़्त के पास गया और कान लगा कर उनकी गुफ़्तगू
झूठमूठ सुनता रहा फिर वापस आकर बादशाह से कहा
कि मैंने उनकी थोड़ी सी बातें सुनी लेकिन जहांपनाह से
अर्ज़ करने का मुंह नहीं पड़ता। इस जवाब से बादशाहको
तसल्ली न हुई और वज़ीर को हुक्म किया कि दोनों उल्लू की
गुफ़्तगू लफ़्ज़ बलफ़्ज़ बयान करे। वज़ीर ने कहा कि अ-
गर हुज़ूर की ऐसी ही मर्ज़ी है तो अर्ज़ करता हूं। "यह एक
उल्लू तो लड़के का बाप है और वह दूसरा उल्लू लड़की का

बाप, और दोनों [illegible] की बात चीत कर रहे हैं। लड़के का बाप कहता है कि शादी में व्याह करने को राज़ी हूं' लेकिन इस शर्त पर कि तुम अपनी लड़की के जहेज़ में पचास उजाड़ गांव दो। इस पर लड़की के बाप ने जवाब दिया कि मैं पचास नहीं पांच सौ दूंगा, परमेश्वर सुल्तान मुहम्मद को सलामत रक्खे इसकी सल्तनत में उजार गांवों की कमी नहीं है"। इस बात के सुनने से बादशाहके दिल पर ऐसा असर हुआ कि उसने तमाम शहर और गांव जो वीरान होगये थे फिरसे बसा दिया और उस दिनसे मुल्क की जिन्दगी के लिये सब कामों में सलाह के ले लिया करता था॥

१६८—'बड़ी है और छोटी है' किसी राजा ने अपने मुंशी पर ख़फ़ा होकर उसका उहदा घटा दिया और उसकी जगह एक नया आदमी मुक़र्रर कर दिया। वह मुंशी जो निहायत चलाक था हमेशा इस फ़िक्र में रहता कि किसी तरह नये मुंशी को नीचा दिखलाकर दर्बार से निकलवाया चाहिये मगर यह इतना लाइक़ था कि उसकी कोई हिक्मत काम न करती। एक दफ़े का ज़िक्र है कि राजा साहिब के नाम लेफ़टिनेण्ट गवर्नर का ख़त आया जिस का जवाब राजा साहिबने फ़र्माया कि दोस्ताना तौरपर लिखो नये मुन्शी ने अलक़ाब में मिहरबान का लफ़्ज़ छोटी है से जैसा कि सहीह है लिखा। इस पर पुराने मुन्शी ने जो बग़ल में बैठा था कुछ सोच कर नये मुन्शी के कान में झुक कर कहा "मुन्शी जी मिहरबान बड़ी है से लिखना चाहिये"। नये मुन्शी ने इसे बेवकूफ़ बनाने का उम्दा मौका

पाकर राजा साहिब के [illegible] के लिये झुंझलाकर और कहा "पागल हुए हो कहीं मिहरबान भी बड़ी हे से लिखा जाता है" । पुराने मुन्शी ने मुंह बनाकर कहा "ख़ैर आप कि इख़्तियार है" । राजा साहिब ने यह हुज्जत सुन कर नये मुन्शी से पूछा कि क्या है । इसनेजवाब दिया "ख़ुदा वंद मिहरबान छोटी हे से होता है और यह बड़ी हे से लिखनेको कहते हैं"। पुराने मुन्शी ने हाथजोड़ कर अर्ज़की "हुज़ूर आली फारसी में दो हे होती हैं बड़ी हे और छोटी हे—बड़े को लिखने में बड़ी हे काम में लाते हैं और छोटे को लिखने में छोटी हे । मुन्शी जी लाट साहिब को छोटी हे से ख़त लिखते हैं भला अगर कहीं उनके मुन्शी ने इस गुस्ताख़ी का हाल कह दिया तो कैसा ग़ज़ब होगा । गुलाम हुज़ूर के दर्बार का पुराना नौमकख़ार है इस लिये मुन्शी जी से दो बार इशारा किया मगर यह नहीं मानते" । यह सुनकर राजा साहिब नये मुन्शी पर निहायत ख़फ़ा हुए और कहा कि तुम न ख़ुद जानते हो और न दूसरे के सिखाने से सीखते हो । मुन्शी ने जवाब दिया कि हुज़ूर मालिक हैं दर्याफ़्त करलें कि क्या सही है । राजा साहिब ने चिढ़कर कहा तुम दर्बार का दस्तूर क्या जानो नये जंगल से पकड़ आये हो—अभी निकलजाव—और (पुराने मुन्शी से) मुन्शी जी तुम सब काग़ज़ सहेजलो और अपना काम बदस्तूर करो" ॥ सच है

नीच ऊंच सब एकहि ऐसे । जैसे भड़ुए पण्डित तैसे ॥
कुल मरजाद न मान बड़ाई । सबै एक से लोग लुगाई ॥

जात पांत पूछे नहिं कोई । हरि को भजे सो हरिका होई।
वेश्या जोरू एक समाना । बकरी गऊ एक करि जाना ॥
सांचे मारे मारे डोलैं । छली दुष्ट सिर चढ़ि चढ़ि बोलैं ॥
प्रगट सभ्य अन्तर छल धारी । सोई राज सभा बल भारी ॥
सांच कहैं ते पनहीं खावैं । झूठे बहु विधि पदवी पावैं ॥
छलियन के एका के आगे । लाख कहौ एकहु नहिं लागे ॥
भीतर होइमलिन की कारी । चहिये बाहर रंग चटकारी ॥
धर्म्म अधर्म्म एक दरसाई । राजा करै सो न्याव सदाई ॥
भीतर स्वाहा बाहर सादे । राज करहिं अमले अरु प्यादे ॥
अन्धा धुन्ध मच्यौ सब देसा । मानहुं राजा रहत बिदेसा ॥
गो द्विज श्रुतिआदर नहिंहोई । मानहुंनृपति विधर्म्मीकोई ।
ऊंच नीच सब एकहि सारा । मानहुं ब्रह्म ज्ञान विस्तारा ॥

"छेदश्चन्दन चूत चम्पक बने रक्षा करीरद्रुमे
हिंसा हंसमयूरकोकिलकुले काकेषु लीला रति:
मातङ्गेन खरक्रय: समतुला कर्पूर कार्पासयो:
एषा यत्र विचारणा गुणिगणेदेशाय तस्मै नम:

दो॰ सेत सेत सब एक से, जहां कपूर कपास ।
ऐसे देस कुदेसमैं, कबहुं न कीजे बास ॥ १ ॥
कोकिल बायस एक सम, पण्डित मूरख एक ।
इन्द्रायन दाड़िम विषय, जहां न नेकु विवेक ॥ २ ॥
बसिए ऐसे देस नहिं, कनक वृष्टि जो होय ।
रहिए तो दुख पाइए, प्रान दीजिये रोय ॥ ३ ॥

१७०—एक दिल्लगीबाज़ शख़्स एक वकील थे जिसने किसी मज़मून पर एक वाहियात सा रिसाला लिखा था बाद मैं मिला और बेतकल्लुफ़ी से कहा "वाहजी तुम भी बाज़ बा-

इसी भी ऐक सुभ से अब तक अपने रिसाले का ज़िक्र भी न किया—अभी कुछ वरक़ जो मेरी नज़र से गुज़रे उन में मैं ने ऐसी उमदा चीज़ें पाईं जो आज तक किसी रिसाले में देखने में न आई थीं"। यह शख़्स एक लाइक़ आदमी की ऐसी राय सुनकर खुशी के मारे फूल उठा और बोला "मैं आप की क़दरदानी का निहायत ही शुकरगुज़ार हुआ—मिहरबानी करके बतलाइये कि वह कौन कौन सी चीज़ें हैं जो आपने उस रिसाले में इस क़दर पसन्द की"। उसने जवाब दिया "क्यों, आज सुबह को मैं एक हलवाई की दूकान की तरफ़ से गुज़रा तो क्या देखा कि एक लड़की आप के रिसाले के वरक़ों में गर्मागर्म समोसे लपेटे लिये जाती थी"।

१७१—एक क़र्ज़दार ने जो किसी महाजन की बुज़राय डिगरी में क़ैद था उसके पास पैग़ाम भेजा कि मैंने क़र्ज़ के अदा करने की एक तदबीर सोची है जिसमें हम दोनों का फ़ाइदा है। जब महाजन उसके पास इस तदबीर का हाल सुनने गया तो उस ने कहा—"मैं सोचता हूं कि मेरे लिये यह बड़ी शर्म की बात है कि यहां पड़ा हुआ दो आना रोज़ आप के सीर खाऊं। न मालूम इस तरह कुछ रोज़ में आपका कितना खर्च पड़ जायगा। मुझे इस की बड़ी फ़िकर रहती है। इस लिये जो तदबीर मैं ने सोची है वह यह है कि आप मुझे क़ैद से छोड़ दें और चार रुपया महीने के बदले सिर्फ़ तीन रुपया महीना मेरे खर्च को दें, और बाक़ी एक रुपया माहवारी क़िस्त के तौर पर मेरे क़र्ज़ में जमा करें"।

१७२—'एक करोड़पती बड़ा कृपन था उसके घरमें कुछ बधाई आई तो उसने अपने रसोइये और मोदियों को बुलाकर कहा कि एक सेर की सोलह रोटी पकाओ और दो दो की आगे एक रक्खो इसे खावे सो खावे बचे सो बांध ले जावे कभी किसी को न बरजो वे बोले बहुत अच्छा यह बात सुन कर कोई उन का चिनहारी बोला कि भाई जो यह ब्याह की लूटालूट उत्तर दिया बंद: दरगाह तो जब करते हैं तब लूटालूट ही करते हैं तुम ने यह कहावत नहीं सुनी क्या ले गये शेरशाह, क्या ले गये सलीमशाह दुनियां में सखी और सूम का नामही रह जाता है ॥"

१७३—किसी मनुष्य ने एक कृपण के संग मित्रता की, कुछ काल व्यतीत होने पर एक दिवस का वृत्तान्त है कि उस मनुष्य ने अपने परम मित्र लोभी सहाय जी से कहा कि हे प्रिय मेरी इच्छा देशाटन करने की हुई है किन्तु परस्पर अधिक प्रीति होजाने के कारण मुझको तुमसे पृथक होते अत्यंत कष्ट होता है, अत: आपसे प्रार्थना करता हूं कि अकृपा करके स्वहस्तीय अंगुलिका मुझे दे दीजिये जिसे मैं प्रतिक्षण अपने शरीर में धारण करे रहूंगा और उस चिन्ह को देख तेरे गुणों का स्मरण किया करूंगा, बस इन वचनों को श्रवण करतेही उस कृपण ने उत्तर दिया कि यदि आप की केवल यही इच्छा है कि मेरा स्मरण बना रहे तो जिस समय तू अंगुली शून्य पावेगा तत्क्षणेव तुझे मेरा स्मरण हो आवेगा कि मैं ने फलाने मनुष्य से अंगुलिका मांगी थी सो नहीं मिली ॥

१७४—एक सुशिक्षित और रूपवान्‌ दर्शनीय महाशय रेलसे

टेशन पर आकर पूछने लगे कि साढ़े सात बजकर ४ मिनट की रेल किस समय खुलेगी, स्टेशन मास्टर ने मुस्कुरा कर उत्तर दिया पौने आठ बजे, तब तो ये बड़े घबड़ाने और नेक म कोप हो बोले वाह साहब वाह आपके यहां का क्याही वि चित्र नियम है कि प्रतिदिन समय बदला करता है, अभी तो ७। ४५ मिनट परजाती थी और अब पौने आठ में जाने लगी ॥

१७५—एक दिन अकबर शाहने बीरबर से कोई बात कह के उसका जवाब पूछा, बीरबल ने वह जवाब दिया कि जो बादशाह के दिल में ठहरा था, सुनकर शाहने कहा कि यही बात मेरे भी जीमें आई है, बीरबल बोला हजूर यह वही बात है जो "सौ सयाने एक मत" शाह ने कहा कि यह कहावत भी तो प्रसिद्ध है जो 'सिर २ अकल और गत २ विद्या,' फिर बीरबल ने निवेदन किया कि हे जगच्छ रख्ख यदि आप की इच्छा हो तो इसका अनुभव कर लीजि ये, बादशाह ने आज्ञा दी बहुत अच्छा, इतनी बात के सुनतेही बीरबल ने नगर में से १०० बुद्धिमान् बुलवा भेजे, और आधीरात के बेला बादशाह के प्रत्यक्ष और सबसम्मु उन से एक खाली कुण्ड (हौज़) बतला कर कहा कि बा दशाह की आज्ञा है कि आप सब इसी समय इस कुण्ड में एक २ घड़ा दूध का ला डालिए० राजकीय आज्ञा के सुन तेही हर एक ने अपने जी में यह बात ठहराया कि जहां पर ९९ घड़े दूध के होंगे वहां मेरा एक घड़ा पानी का क्या मालू म होगा, पानीही ला डाला, बीरबल ने अकबर शाह को दिखाया, शाहने उन सारे (बुद्धिमानों) से कहा कि तुम

ने क्या समझ मेरी आज्ञा का उल्लंघन किया सच कहो नहीं तो मैं क्रूरता के साथ काम करूंगा, उन सब में से हर एक ने हस्ताञ्जली बद्ध होकर यही कहना आरम्भ किया कि "कृपा सिन्धु अब चाहे आप मारें चाहे छोड़ें" दीन के विचार में यह बात निश्चित ठहरा कि जहां ९८ घड़े दूध के होंगे वहां एक घड़ा पानी क्या मअलूम हो सकता है, सब के मुख की एकही धुनि सुनकर बादशाहने बीरबलसे कहा "हे प्रिय जो कानों सुनते थे सो आंखों देखा कि "सौ सयाने एक मत" ॥

१७६—एक जमात साधुओं की देशाटन करती थी कभी भजन गाती और कभी ईश्वर के गुण कथन करती, एक बनावटी फकीर साधु महिमा न माननेवाला उनके दर्द से असमर्थी भी ऊंट पर सवार उस समूह के साथ था कि एक लड़के ने एक तान मारी जिसके लगने से उड़ते पक्षी आकाश से पृथ्वी पर गिर पड़े और उस फकीर का ऊंट नाच उठा और फकीर को गिराय कर बन को चला गया, किसी ने कहा कि ऐ फकीर यह तान पशु में असर कर गई और तुझे कुछ भी खबर न हुई ॥

दो०—यह वह चिरियां भीर को मोहि कियो प्रकास।
मनुज कहा जो लाल को तू नहिं करत तलास ॥
भयो मगन मनऊंट सो पसु सुनि प्रेम सुगान। तोहिन प्रेम तो खर सरिस जान नहीं तूं जान ॥ कामी बाकी याद में जेहि देखों कहु गान। सोइ सुनत यह शब्द को जाके दीन्हें कान ॥ बुन बुल हो गुल फूल पर जपत न ताहि सुजान। हर कांटहु तेहि जपन में, मनहु जुबान समान ॥ [illegible]

१०७—एक फकीर मेहमान एक अमीर महाराज अधिराज का हुआ भोजन के समय नेम से कम खाया और पूजन नित्य नेम से अधिक की जिसमें राजा को उसकी सिद्धाई सूचित हो ॥

दो॰—डरत अहो तू अवध को नहिं, पहुंचोगे आइ ।
बाबा तू तो चलत हैं, तुरक देस की राह ॥

और जब आसन पर आया तो भोजन अपने पासका खाने लगा एक चतुर शिष्य बोला कि राज निमंत्रण से आप नहीं अघाये, उत्तर दिया कि उनके सामने प्रतिष्ठा के वास्ते कुछ कम खायाथा शिष्य बोला पूजा भी फेर कीजिए क्योंकि वहां की की हुई पूजा भी मिथ्या और कुछ नहीं हुई ॥

दो॰—गुन को राखो हाथ पर ऐ गुन कोख दबाय ।
ऐसे खोटे दाम से क्या वैसही मैं जाय ॥

१०८—एक साधु की एक सभा में प्रशंसा लोग करते थे साधु सिर उठाय कर बोला मैं जैसा हूं वह मैंही जानता हूं।

दो॰—कहत हमारे प्रगट गुन छिप दुर गुन नहिं जान । मोसे खर सूकर भले जो देखो पहिचान ॥ तन देखन में सुघर है देखत है ते जो लोग । मोको निज दुर गुन लखन प्रति दिन बाढ़त सोग ॥ जिमि मयूर के चित्त को अग बंदत भल जान । सो निज पायन देख के रहत सदा सकुचान ॥

१०९—एक साधु समुद्र के तट पर व्याघ्र से घायल किसी औषधि से अच्छा नहीं होता था और ईश्वर के दिये का सुयश गाता था लोगों ने पूछा कि ईश्वर ने क्या सुख दिया है जिसका गुण गाते हो कहा क्लेश में फसा हूं किसी पाप कर्म में नहीं ॥

दो० टेढ़ इमाहम मरन लग, मेरी प्यारो यार। तो न कहो मैं यार से, मोको प्रान पियार॥ कहा भयो अपराध का, जामे भहो मलीन॥ कासों ऐसे कहन को दुख जानत हैं दीन॥

१८०—एक राजा ने एक निरचर साधु को बुलाया साथ मे विचार किया कि कोई दवाई खायलीजिये कि जिसमें तपस्वियों के सदृश शरीर हो जाय दवा खइरोकी थी प्रान निकल गया॥

दो० जानेउ जाहि बदाम सम, छोरस चिक्कन खाद। पत्र पत्र पर प्याज सो, देखे चढ़े खराद॥ ईश्वर से जो विमुख नहिं, व्यापक लखु सब ठांव। पीठ सो कावे ओर कर, पढ़त निमाज कलाम॥

१८१—एक राजा ने एक साधू से पूछा कि आप हमारी याद करते हैं या नहीं कहा कि जब ईश्वर की याद भूलते हैं तब करते हैं॥

दो० यार बार जेहि देहि नहिं, इत उत डोरत जोन। जेहि बोले निज द्वार पर, फिर डोरत नहिं तौन॥ दर पावत नहिं यार को, दर दर दुर दुर होय। जो पावै दर बार सी, टांग प्रसारे सोय॥

१८२—एक सत पुरुष ने स्वप्न में एक देशाधिकारी को देखा स्वर्ग में और एक तपस्वी को नर्क में सोचा कि हे ईश्वर यह विपरीत बात कैसी है आकाश वाणी भई कि राजा साधुओं से सत भाव करने के कारण स्वर्ग में है और तपस्वी उनको समीपता से नर्क में॥

दो० गुदरी माला भजन यह, पावै कोने काम। य: कर-

मन से दूर रति प्रेम सहित रटु राम ॥ जो फल हो दिये के सरत न एको काज। साधु चित होय कीजिये राज काज सुख साज ॥

१८३—एक साधू का कथन है कि मैं रातभर राह चला और भोर निद्रा वश एक बन तट पर सोया एक मस्त जो साथ था न सोया और चिल्लाया और बन की राह ली, दृष्ट न भये मैंने उस्से पूछा कि यह क्या दसा भई कहा चाहि क इत्यादि पच्छियों को देखा वृच्छों से मयूर, चकोर, तीतर इत्यादि को पर्वतों मे दादुरों का जल सेवन मृग इत्यादि बन से भोर मची रहेहैं, मनोहर गुण गा रहे हैं, मैंने विचारा कि पशु पच्छी इस समय भजन करें और तुम मनुष्य होके सोवो ॥

दो॰ पसु पक्षी हर नाम रटु, तू सोवै अनजान।
जाननहीं मृटु काठ है, की है लोहुपखान ॥

१८४—एक राजा ने मानतामानी कि यदि मेरा मनोरथ सिद्ध हो तो साधुओं को बहुत द्रव्य दूंगा॰ ईश्वर ने सिद्ध किया तो एक मंत्री को आज्ञा दी कि यह द्रव्य साधुओं को बांट आओ मंत्री सब दिन घूमघाम जब संध्या को फिर आया और थैलो राजा के सामहने रखदो और कहा मैंने साधुओं को ढूंढ़ा पर नहीं पाया॰ राजा ने कहा यह क्या बात है मैं जानता हूं कि इस नगर में बहुत साधू हैं॰ अर्ज़ किया कि हे प्रभु जो साधू हैं वह द्रव्य नहीं लेते और जो लेते हैं वह साधू नहीं हैं॰ राजा ने हंस के कहा कि जितनी मुझ को साधुओं से प्रीति है उतनी दुष्टों से द्रोह है॰ दूसरे मंत्रियोंने उस मंत्री का पच्छ कर कहा कि विचार इसका सच है ॥

दो० । साधु कहावे लेइधन, तिनको लखो असाधु ।
ईश्वर को साद्रे नहीं, धाम धान्य धन साध ॥

१८५—एक गुरु के पास दो आदमी मंत्रोपदेश के लिये गये गुरु ने दो पत्ती उन को देकर कहा कि जहां कोई न हो वहां इन को मार लेआओ एक तो तुरन्त आड़ में जा मार लाया दूसरा बहुत घूम घाम एकान्त न पा पत्ती को ले आया और कहा कि महाराज मुझे कहीं अकेला नहीं मिला पूछा क्यों ? उत्तर दिया कि जहां और जीव न थे वहां मैं और यह पत्ती था यदि इस पत्ती का हिसाब न करे तो मैं और ईश्वर था, गुरुने इसी को मंत्र दिया और दूसरे को धता किया ।

दो० । रोम रोम घट२ बसो, थल थल कासो पूर । कूर दूर तेहि जान के, पाप कर्म में चूर ॥ हाजिर नाजिर देख भो, साहिब को सब ठाम । साहिब के दरबार में ताब नेक अंजाम ॥ पहरा साहिब को अहै, डरो करो सोइ कार । अंत फज़ीहत होइ नहिं, साहिब के दरबार ॥

१८६—एक गुरु के पास २ आदमी उपदेश लेने गये एक महा ढिपई था दूसरा सीधा सादा गुरु ने ढिपई को शिष्य कर दूसरे को जवाब दिया लोगों को उस गुरु के तरफ से दुर भाव हुवा कि बाबा कदाचित् ऐसेही हैं निदानकिसी ने कारण पूछा उत्तर दिया कि यह चतुर है और प्रेम अनल इस के हृदय में है जब ईश्वर की ओर वह झुकाया जायगा वैसाही प्रेम उधर लग जायगा औ दूसरा महा मूढ़ है प्रेम विहीन उसमें उपदेश असर न करैगा ॥ और यह सोरठा मेरा और पदमासी जी का पढ़ा ॥

सो० । सख्त हृदय उपदेस, [illegible] लागै जैसे [illegible] ।
बसै मलै गिरि देस, तउ बांस न बास में नाहिं ॥ कांची
हिये बिनु आग, छूटत तिन को दाग नहिं। प्रेम अन-
ल जेहि लाग, सोई जानो बेदाग है ॥

मैं कैसे के सिखावौं राम रसिया उमन चाहैं नघसवा। हरखा जरसे यह जिभिया के मीठो दूध तिताय । खलतम मुख को पाय चंद्रिका हारेउ करि करि जसवा ॥ सतसंगति को रंगन लागे जद्यपि करै सतसंग । सून्य हृदय बस बाकै जैसे मलया गिरि को बसवा ॥ हरियर तरु पंछी सुख से बोलत अमृत बानी । अवघट पाय दोउ पंखन में आग लगी कर लसवा ॥ जे मन चाहै तेहि में जो राम रसायन घोरी । इष्टदेवता सिया करुना से सुढर ठरै तो जसवा ।

१८७—एक तपस्वी बन में बहुत दिनों से तप करता और वृक्ष के पत्ते खाता था। देशाधीस नृप एक दिन उसके दरशन को गया और कहा कि यदि कृपा कर नगर में निवास करिये तो आप के लिये एक स्थान बना दिया जाय कि इससे विशेष तप करने की जगह मिले और नगर आपके दरशन से मनोरथ लाभ करे और आप केउपदेश से सुमार्ग चले तपस्वी ने यह स्वीकार नहीं किया और मुंह फेरा एक मंत्री ने कहा कि महाराज की खातिर बस थोड़े दिनों शहर में रहो और स्थान की परीक्षा करो यदि भजन में विघ्न देख परै फिर आप को एखतियार है। तपस्वी नगर में आया तो राजा ने राज बाग अति रम्य और मनोहर रहने को दिया गया ॥

दो० ' मानो काम कपोल सम, जहं गुलाब के फूल ।

सुन्दर ताके अलक जनु, चिन जहं के सुख मूल ॥
फिर महा सुन्दर एक दास और दासी वासे के वासते भेजे॥
दो० । तपसिनहू को मन हरैं, सरद चन्द्र सी जौन।
सुन्दरता जनु तनु धरे, सुधर मोर से तौन॥ तोष जातनको नहि रहे, करि न सके फिर ध्यान॥ आसनहगुका सीस को, जे जोगीस प्रधान॥ पलक परैं नहि नेकहूं देखन नैन अघाय, जालन्धर को प्यास जिमि नदिह पाय नहिं जाय॥

तपस्वी मधुर भोजन खाने भले वस्त्र पहिर ने फल सुगंध इत्यादि शब्द स्पर्श रूप रस गंध से सुखी होने लगा जैसा कवि कहे हैं सुघर रूपों की अलक बुद्धि के पैर का बंधन है और चतुर पक्षियों का फंदा॥

दो० आकृत बुध तोहि अलक में, दिय मन धर्म फसाय।
हिज चातुर तुव दाम में, फसत दौरि के आय॥

निदान तपो धन क्षीण हुवा॥

छं० तपसी पंडित गुरु औश ज्ञानी कविवर होय। मधुमाक्षी सम रस फसे नसे फवे सब खोय॥

एक बार राजा तपसी के दरशन को गया देखा रंग रूप बदला और मोटा हुआ तकिया लगाय कामरूप सेवक मोर का पंख भलरहा है राजा देश में आने में प्रीत साधु पंडितों में प्रगट की मंत्री और सुखी रहने से प्रसन्न हुआ आप बोला कि प्रीति का लक्षण यह है कि दोनों के साथ भलाई करिये पण्डित जी को धन दो कि दूसरे भी विद्या पढ़े तपस्वियों को कुछ न दे जिसमें उनका तप बना रहै॥

दो० तपसिहि धन नहिं चाहिये, नहीं चाहिये धाम।
लेहुसमति जन तिन्हे तजि, जाहि दूसरे ठाम॥

[illegible] एक सुधी साधी [illegible] [illegible] जाया

करती। एक दिन पण्डित जी ने कथा में कहा कि ईश्वर का वही परम भक्त है और पक्का श्रोता है जो वैसा करता है जैसा कथा में उपदेश हो।

दो० उत्तम मध्यम लघु कहत, ज्ञानी उत्तम जान ।
मध्यम कहिय उपासु को, करमहिं लघु करि मान ॥ १
(पुन:) सार ग्रहो सो सूप सम, चलनी ग्रहो असार ।
नक्ष के सम दोउ रहित, श्रोता तीनि प्रकार ॥ ॥२॥
(पुन:) श्रोता मन सों जो सुनै, स्त्रोता कतरै बात
सोता सोइ रहै सुनत, तीनिहुं ए विख्यात ॥ ॥ ३ ॥
जेहि सुनि होइ विराग नहिं, सांति शुद्ध सुख चित्त ।
वृथा पाठ सो जानिये, कौवे की सी वृत्त ॥ ॥ ४ ॥
श्रोता जानत धर्म अरु, श्रोता तजत कुबुद्धि ।
श्रोता-ही को होत है, ज्ञान मुक्ति सुचि सुद्धि ॥ ५ ॥
वक्ता कबहु न हूजिये, श्रोता रहिये नित्त ।
सारसार बिचारि के, निश्चल कोजे चित्त ॥ ६ ॥
जोभ दई है एक प्रभु, दोय दिये हैं कान ।
एक कहै अरु द्वै सुनै, कहिये ताहि सुजान ॥ ७ ॥

इसके उपरान्त पण्डित जी ने बहुत साधु-पुण्य दान करने को उपदेश किए। परन्तु वह सब दरिद्रता अथवा आलस्य के कारण बुढ़िया से होने योग्य नहीं थे कथा की समाप्ति होने पर पण्डित जी ने उच्च स्वर से कहा "इति ॐमारकण्डेपुराणे" तब तो बुढ़िया बड़ी प्रसन्न हुई और जी में सोची की यह बात तो सहज है सु-

झसे थोड़े ही परिश्रम से हो जायगी, यह विचार कर तुर न्त पास के एक हलवाई की दूकान पर दौड़ कर चारपां- च उपले उठालाई और पण्डित जी के ऊपर मारने लगी तब तो सब श्रोता हां हां करके चिल्लाने लगे कि यह कौन दुष्टा है जो कथा पर उपले फेंके है॰ तब बुढ़िया निवेदन करने लगी कि महाराज मैं गरीबनी हूं मुझ से और कोई बात तो कथा की नहीं बन पड़ी यही सहज थी आपने अ- भी श्रोताओं को उपदेश किया है कि मारकण्डेयपुराणे, सा महाराज जल्दी में हलुवाई की दूकान पर ऐसेही कण्डे मिले हैं सो महाराज मैं ने मार दिए, बहुत पुराने तो न- हीं दीखे परन्तु कुछ महात्म तौ होइगा कल्ल मैं दिन भर बीन कर पुराने कण्डे लाकर मार दूंगी आज तो यही मि- ले॰ सब श्रोता और पण्डित जी उसकी मूर्खता पर हंस दि- ए और समझाने लगे कि हे मूर्ख स्त्री मारकण्डे पुराणे शास्त्र का नाम है इसका यह अर्थ नहीं है कि पुराने कण्डे मार तब बुढ़िया क्षमा मांग कर घर गई और कहने लगी कि अब जो बात कथा में निकलेगी उसे पहिले किसी से पूछ लूंगी तब करूंगी जिसमें फिर ऐसी हंसी न हो ।

१८८—एक चौबे जी ऊपर कोठे पर पेशाब कर रहे थे, नीचे सड़क पर एक राह चलते पर छींट पड़ी तो उसने चिल्ला के कहा यह कौन है, कैसा पानी फेंकें हैं चौबे जी उठ के बोले "भइयौं यह पानी तो सुन्दर जमुना मइयौं को जल है परन्तु एक घड़ी पेट में रह चुको है" ॥

१८०—अकबर ने बीरबल से कहा कि एक हमारा भी "महा-

भारत" बने कोई ऐसा पण्डित ढूंढ़ के लावो कि वह ऐसा ग्रंथ लिखे बीरबल ने एक मूरख चौबे को सामने लाकर खड़ा कर दिया अकबर ने कहा कि यह लिखेंगे बीरबल ने कहा जहांपनाह! सब पण्डितों ने इनकार किया सिरिफ येही लिखने को राजी हुए हैं चौबे जी ने कहा महाराज छः महीने में मैं तैयार कर लूंगा कुछ जब तक खरच को मिल जाय अकबर ने खजाने से रुपया दिलाकर चौबे जी को रवाने किया यहां आन कर चौबे जी के गुलछर्रे उड़ने लगे खूब गहरी घुटने लगी और ऊपर से लड्डुओं के भोग उड़ने लगे जब सब निबट चुका और छः महीने भी पूरे हुए तब चौबे जी की दरबार में तलबी हुई जब बादशाह ने पूछा कि महाभारत लिखा चौबे ने जवाब दिया कि पृथ्वी नाथ एक बात बेगम साहिबा से पूछना भूल गया था इस कारण अभी सब पूरा नहीं हुआ अकबर ने हुकुम दिया कि इन को महलों में ले जाओ और बेगम साहब से जो यह चाहें परदे से पूछ लें चौबे जी महलों में खड़े कर दिये गए और बेगम साहब परदे के अन्दर आईं तब उन्हों ने पूछा कि महाराज बादशाह सलामत का हुकुम है कि हमारा भी एक "महाभारत" लिखा जावे सो उस में मुख्य कथा द्रौपदी की है उन के पांच पति थे इस लिये कृपा करके बतला दीजे आप के एक पति तो बादशाह सलामत हैं और कौन हैं जिन की कथा लिखी जाय बेगम साहब ने क्रोधित हो कर चौबे को निकलवा दिया और इस बेअदबी की खबर अकबर तक पहुंची उस ने हंस कर उस को गु-

स्वाखी माफ कर के कहा कि जाओ हमें ऐसी महाभारत बनवाना मंजूर नहीं है ।

१८१—एक गमार बुंदेला राजा मथुरा वृन्दावन की यात्रा को आया उस का पुरोहित मूरख चौबे उलटे टेढ़े शुद्ध अशुद्ध श्लोक पढ़कर पूजा कराकर और दान दक्षिणा लेकर प्रसन्न होकर घर आया एक पण्डित जी जो शास्त्र की विधि जानते थे रास्ते में राजा से कहने लगे कि यहां के चौबे लेना मात्र जानते हैं और कुछ पूजा की विधि नहीं जानते अभी जो आप के चौबे पूजा करा गये हैं सूरज को अर्घ नहीं दिला गये राजा ने क्रोधित होकर हुक्म दिया कि चौबे को तुरन्त बुला लाओ चौबे जी सब नकदी और वस्त्र आभूषणादि जो राजा से मिले थे चौबाइन को सौंप रहे थे कि इतने में राजा का सवार पहुंचा और कहा कि महाराज ने बड़े क्रोधित होकर कहा है कि चौबे को तुरन्त बुला लाओ चौबे ने सवार को प्रसाद खिला के पूछा कि ठीक२ बता दो राजा किस कारणसे गुस्से हो गया है जैसा कुछ हाल था सवार ने कह दिया तब चौबे ने घर के कलस को खूब मांजकर और कुंए से पानी भर कर राजा के यहां आये राजा ने उन्हें देखते ही पूछा कि कि तुम्हे विधि पूर्वक पूजा तक नहीं करानी आती सूरज को अर्घ तक न दिलाया चौबे जी कड़क कर बोले वाह ! महाराज वाह ! विधि तो महाराज लोग ब्रजवासियों से सीख जाय हैं भला महाराज जमुना जी के जल से कैसे सूर्य्य को अर्घ दिलाता जमुना सूर्य्य की पुत्री है सो महाराज हम साधारण लोग तो पुत्री का

थाल अङ्गीकार नहीं करते भला देखो यह अङ्गीकार [illegible] हो तो मैं यह सुन्दर कुएं का जल अर्घ के लिये लेने गया था। राजा को समझ में चौबे की बात आगई और उसका और अधिक सतकार किया और चुगली करने वाले पर बड़ा अप्रसन्न हुआ ॥

१८२—एक अहीरिन सिर पर दहेंड़ी लिये बाजार में दही बेंचने जातीथी, राह में एक मनुष्य को (जोहाथ में छड़ी लिये बड़े सजधज के साथ जाता था) देख उस को जाति पांति पूछने लगी जाना कि कायस्थ है। तब हर्ष पूर्वक बोली कि साहब! कायस्थलोग बड़े चुस्त और मुन्शी होते हैं, सोआप कायस्थ हैं एक ऐसा उपाय बताइये जिस से मेरे सिर का बोझ हलका हो और मेरे सारे देह में जो गरमी से पसीने हो रहो है सो ठण्डे हों और मुझे चलने में भी कष्ट न मालूम हो लाला साहिब ने इस बात को सुनते ही दहेड़ी पर छड़ी चलाई और तोड़कर अहीरिन के जाने की राह होकर भागचले, अहीरिन भी बकती झकती पीछे पड़ी। निदान लाला साहिब एक तेली के घर जा पैठे, तेली के यहां एक सीधासादा ग्राहक तेल लेने को आया था, तो पात्र भर तेल ले चलुवा पैंदी में मांगा अतएव सब तेल गिराया, यह हाल को लाला साहिब से देखा न गया आहर करनें लगी यह आवाज़ सुनकर तेली झुंझलाकर बोला कि वाहर "तेली का तेल जले, मशालची का हिया गले" इतना तेल गया तो क्या हुआ इस का रोग बलाय ही गया, तेली का वचन सुन लाला सा-

हिब उसके तेल के कुल भांड़े को तोड़ फोड़ कर तेल गिरा भाग निकले,तब तक अहीरिन भी आपहुंची और पीछे लगी और तेली भी तेल की नुकसानी को देख लालभभूका हो उन्हें खेद चला. ये दोनों पीछे२ दौड़े जाते थे और लाला-साहिब आगे बड़े फुर्तीले हो बड़ी तेज़ी से भागे चले जाते थे निदान एक तम्बोली की दूकान पर आपहुंचे और तम्बोली से मुफ्त में एक बीरा पान चाहा और मांगा। तम्बोली छूटतेही जवाब दिया वाह! बड़े शौकीन हो दांत रंगने का बड़ा शौक है, तो जाओ किसी के दांत में दांत रगड़ लो निदान उस तम्बोली की नवयौवना सुन्दरी चतुरी चर्फ़री बालिका घर से सीसपर घड़ा ले पानी के लिये निकली, लाला साहिब ने उस के रंगीने दांत देख झट छाती में लगा दांत में अपने दांत रगड़ दिये और तम्बोली के डर से भाग चले निदान अहीरिन,तेली,के साथ तम्बोली भी उन के पीछे हो लिया, लाला साहिब कुछ दूर जाकर एक मनुष्य के मकान में घुस गये. मकानवाले ने इन्हें देख पूछा कि आपकी जाति क्या है ? इन्होंने कहा कि कायस्थ यह सुन मकानवाले ने कहा कि कायस्थ लोग तो बड़े इल्मदार और होश्यार होते हैं सो आप तुलसी कृत रामायण तो अवश्य जानते होंगे, कहिये तो लङ्का कैसे जली। लाला साहिब ने झट उसके घर में आग लगा दी और जब बड़े ज़ोर शोर के साथ आग की लपट फैली तो कहा कि देखो ऐसे ही लंका जली थी इतना कह लाला साहिब तो भाग निकले और मकान वाला पीछे हो लिया

और वे दोनों [illegible] तेली, और तम्बोली भी [illegible]
और उनके पीछे लगे निदान कुछ दूर जाकर उन लोगों ने लाला जी को पकड़ लिया और न्यायी के पास ले गये, न्यायी ने हाज़त को भेजा। जब कुछ रात बीती तब लाला साहिब ने अपनी मीठी२ वाणी से पहरुओं को मोहितकर उन के हाथ से बेहाथ हो राजमहल में (जो पास ही था) बड़ी चालाकी के साथ (जो पहरुओं को भी यह खबर न मालूम हुई) घुस गये। आधीरात के समय जब सारे घर को घुम२कर देखने लगे तब ख़ास रनिवास घर की हालत यह देखा कि रानी राजा क्रोधाग्नि में डुबे हाथ में तलवार लिये एक दूसरे के प्राण के गांहक हो रहे हैं इस हालत को देख झट नगारा तो गड़गड़ा दिया सारे लोग चौंक पड़े और घिर आये राजा भी तलवार रख क्रोध शान्त-कर इस हालत में प्रवृत्त हुए निदान नगारा बजाने वाला जब कोई आपस में न ठहरा तब लोगों को सन्देह हुआ और खोजने लगे निदान लाला साहिब ड्योढ़ीदार के हाथ पकड़ाई पड़े और बांधकर क़ैद किये गये। वक्त दरबार के जब हाकिम ने वे पांचो मुद्दइयों को और लाला साहिब मुद्दाअलह को पुकरवाया और क्रमसे अहीरिन, तेली तम्बोली, मकानवाला, ओ ड्योढ़ीदार का इजहार लिया एक एक के बाद लाला सहिब से भी जवाब लेते गये।

अहीरिन—हुज़ूर मैं ने इन से कहा कि कायस्थ लोग बड़े चालाक होते हैं सो मुझ को यह उपाय बताइये जिस से मेरे सिर का बोझ हलका हो और ग्रीष्म ऋतु जो मुझ को व्याकुल कर रहा है उस के तापसे बचूं और राह

भी शीघ्र कटे। इसपर, इन्हों ने बे कुसूर मेरे सिर पर की दहेड़ी फोड़ दी।

लाला साहिब—हुज़ूर मैं ने इस की दहेड़ी फोड़ी इस से इस के शरीर पर कुछ दही आगिरा इस से इस का बोझ हलका हुआ और शरीर भी ठण्ढा हुआ और मैं भागा और यह भी मेरे पीछे पीछे दौड़ चली इस से इस की राह कटी इस में मेरा अपराध क्या।

तेली—मेरे यहां एक ग्राहक आया दैव संयोग उसका तेल गिरपड़ा ये आदर करने लगे मैंने कहा कि इतना तेल गया तो इसका रोग हो बलाय गया इस पर इन्होंने मेरे तेल के कुल भांड़े फोड़ डाले॥

लाला साहिब—इसमें मेरा अपराध क्या मैंने इस के तेल के भांड़े को तोड़कर तेल गिराया सो तो इस के कहने मुताबिक इसके रोग बलाय को भगाया।

तम्बोली—मेरी दूकान पर गये और मुफ्तमें एक बीरा पान मांगा तो मैंने कहा कि दांत रंगने की बड़ी शौक़ है तो किसीके दांत में दांत रगड़ लो। तब इन्होंने मेरी लड़की की छाती में लगा दांत में दांत रगड़ लिये।

लाला साहिब—हुज़ूर मैंने इस के हुक्म मुताबिक़ काम किया मैं क्या जानूं कि वह किस की लड़की है और इस बात से मुझ को गर्ज़ क्या मुझे को तो दांत रगड़ने से काम।

मकानवाला—मेरे यहां गये और मैंने कायस्थ जान दून से पूछा कि भाई आप लंका जलने का हाल अवश्य जानते होंगे, कहिये लंका कैसे जली थी इस पर इन्होंने मेरे घर में आग लगाकर सारे घर को धुआंधार कर दिया।

लाला साहिब—[illegible] मैंने [illegible] किया [illegible]
धा सादा आदमी बिना कुछ कर दिखाये न समझेगा इस-
वास्ते प्रत्यक्ष दिखा दिया।

ड्योढ़ीदार—हुज़ूर यह चोर राजमहल में चोरी करने को गया, तो संयोग से नगारे में इस का धक्का लगा और आवाज़ हुई तो सब लोग जाग पड़े। निदान यह चोर पकड़ाई पड़ा और हुज़ूर में लाया गया।

लाला साहिब—हुज़ूर मैं चोरी के नियत से न गया था बरन राजभवन देखने को गया था, तो रनिवास में देखा कि रानी, राजा आपस में एक के प्राण के ग्राहक एक हो रहे हैं तब मैंने सोचा कि नगारे में चोप देने का फिर ऐसा अवसर न मिलेगा और न किसी को मिला होगा, मैंने चोप दिया और उन लोगों का प्राण बचाया अगर मेरी बातों का विश्वास न होवे तो राजा साहब से पूछ लेवें और मेरी बातें सही होवें तो मुझ को दूना इनाम मिले क्योंकि उस समय चोपदार गाफ़िल था और मैंने अपनी युक्ति से दोनों का प्राण बचाया। हाकिम ने निश्चय किया तो सब बातें सच मालूम हुई तब मुसकिराकर उसे छोड़ दिया।

१८३-मोहिनी ने कहा "न जाने हमारे पति से जब हम दोनों की एक ही राय है तब फिर क्यों लड़ाई होती है। क्योंकि वह चाहते हैं कि मैं उनसे दबूं और यही मैं भी"।

१८४-रामेश्वरदत्त के घर एक दिन जगदेव सिंह गए बैठने के वास्ते चटाई बटाई कुछ नहीं थी विचारे खड़े रहे। पंडित जी बड़े चाव से बोले "ठाकुर साहब देखिये आप कैसे

भाग्यवान हैं कि जहां जाते हैं वहां बैठने को जगह नहीं मिलती"।

१८५—एक मुसलमान अमीर के दीवान खाने में एक मुफ़्त-खोरे खाने का ताक में टहल रहे थे। जब देर हुई तो आप खिदमतगार से पूछने लगे "बेगू दस्तरखान कब बिछैगा" नौकर ने जवाब दिया 'ज्योंही तुम जाओगे'।

१८६ बाबू प्रह्लाददास से बाबू राधाकृष्ण ने स्कूल जाने के वक़्त कहा "क्यों जनाब मेरा दुशाला अपनी गाड़ी पर लिए जाइएगा" उन्हों ने जवाब दिया 'बड़ी खुशी से, मगर फिर आप दुशाला मुझ से किस तरह पाइएगा' राधा कृष्ण जी बोले 'बड़ी आसानी से क्योंकि मैं भी तो उसे अगोरने चलता हूं'।

१८७—एक अमीर से किसी फकीर ने पैसा मांगा उस अमीर ने फकीर से कहा "तुम पैसों के बदले लोगों से लियाकत चाहते तो अब तक कैसे लायक हो गए होते" फकीर चट पट बोला "मैं जिस के पास जो देखता हूं वही उस से मांगता हूं"

१८८ - संप्राप्ते षोड़शे वर्षे गर्दभी चाप्सरायते।

एक औरत जिसकी जवानी ढल चली थी खूबसूरती के गुरूर से अपनी एक नौजवान लौंडी से पूछा "तू मेरे हुस्न को कितनी कदर करती है" लौंडी बोली 'करीब करीब अपनी जवानी के"।

१८९—पटना कालिज के एक पंडित विद्यार्थियों को पढ़ा रहे थे कि एक बंगाली ने पेशाब करने के लिये छुट्टी मांगी

[illegible] । उस [illegible]

[illegible] महाराज [illegible] किन्तु नहीं [illegible]

पर पेशाब छोड़ देता हूं । यह सुन पंडित बिचारे अपना मुंह सा मुंह लिये रह गये ।

२००—एक मास्टर इमतिहान में एक लड़के से पूछा कि मेरा प्रश्न तो कुछ कष्ट नहीं देता । उसने कहा नहीं, किन्तु उत्तर कष्ट देता है ।

२०१—एक स्थान पर दो मनुष्य बैठे थे एक ने कहा भाई अमुक ने पौने दो सौ रुपये पर घोड़ा लिया है दूसरेने कहा नहीं जी एक सौ पचहत्तर रुपये पर मोल लिया है चलो न उससे पूछ लें । यों कह कर दोनों उससे पूछने गये तो उसने कहा कि दोनों सच्चे हो तब तो दोनों बिगड़े वाह क्याही हम लोगों को तुम झूठे बनाते हो भला दोनों सच्चे कैसे होंगे इस में अवश्य एक सच्चे और एक झूठे होंगे तब उसने कहा मन ही मन निबटेरा करलो अथवा दूसरे से पूछो मुझ से यह झगड़ा न छूटेगा ।

२०२—एक खत्री श्रीदयानन्द स्वामी के पंथ पर चलनेवाले अपने को बहुत वाचाल लगाते थे । एक सभा में गये और नाच देखने ही के समय में लेक्चर का सामान करने लगे कि कसबी ने पान खाकर पीकदानी न रहने के कारण फरसके बाहर पीक फेंकने गई तो रूमाल गिर पड़ा । आपने अपनी वाचालता के कारण उससे छेड़छाड़ कर कहा कि बीबी देखो बच्चा गिर पड़ा । हाजिर जवाब वेश्या ने कहा कि बच्चा गिरा तो सही पर गिरते ही बोल दिया । यह सुन

कर सभा वाले ... की वाचालता पर पछताने लगी। सच है।

श्लोक।

देशाटनं पण्डितमित्रता च वाराङ्गना राजसभाप्रवेश:।
अनेकशास्त्राणि विलोकनञ्च चातुर्यमूलानि भवन्ति पञ्च:॥

दो०। देशाटन बुधमित्रता, वेश्या राज मिलाप।
बहुत शास्त्र अवलोकिवो, चतुरइ पांच प्रताप॥

२०३—एक ईरिशमान ने किसी धनिक से नौकरी की प्रार्थना की, उन धनाढ्य ने कहा सुनते हो भाई ईरिशमान को अनुचर रख कर व्यर्थ कौन आपत्ति में पड़े, इस को सुन ईरिशमान ने उत्तर दिया कि हे स्वामिन् हमारी जाति की नौकरी रखने में आपत्ति कौन सी, फिर धनिक ने कहा कि अभी थोड़े ही दिन हुए हैं कि मैं ने एक तुम्हारे स्वजातीय को नौकर रक्खा था, वह पञ्चत्व को प्राप्त हुआ तो मुझी को उसके मृतक क्रिया का भार वहन करना पड़ा जिस में हमारे द्रव्य की हानि हुई बस उसी क्षण से मैं ने प्रतिज्ञा कर ली कि अब आज के दिवस से फिर कभी किसी ईरिशमान को सेवक न बनाऊंगा, जीविकाभिलाषी ने इतना सुनतेही हस्तबद्ध हो कहना आरम्भ किया कि यदि आपके नौकर न रखने का केवल इतना ही कारण है तो आप निस्संदेह रहिये इस दीन ने बहुत सी नौकरियां की हैं और प्रति स्वामी का हस्ताक्षरित प्रशंसापत्र भी मेरे पास है, उसको नेक अवलोकन करके अपने सन्देह को दूर कर लीजिये कि मैं आज लों किसी स्वामी की सेवा में नहीं मरा हूं जो उस

[illegible] हमारी [illegible] करता पड़ता।

२०४—एक बुद्धिमान चिरकाल लों रोगग्रस्त रहा किन्तु ईश्वर की कृपा से अब वह सम्पूर्ण प्रकार से आरोग्य हो गया तो एक [illegible] का वृत्तान्त है कि उस के इष्ट मित्रों ने उस को धन्यवाद दिया, और कहा कि भला आज परमेश्वर ने यह दिन ता दृष्टिगोचर कराया । इस वाक्य के सुनतेही उस बुद्धिमान ने हास्य युक्त हो उत्तर दिया कि हां मेरे आरोग्य होने में तो सन्देह नहीं है, परन्तु आश्चर्य कि श्री मद्यमस-होदर भिषक महाराज यथेष्ट दक्षिणा तो लेहींगे और इस के उपरांत जो एहसान जताबेंगे वह घलुए में ।

२०५—किसी दिन तुलसीदास गुसांई कितने एक आदमियों के बीच कहीं बैठे ज्ञान चरचा करते थे इस में उस राह से किसी की बरात आ निकली उसके बाजे को आवाज सुन सब के मन दुचिते हुए तब तुलसीदास हंसे उनको हंसता देख उनमें से किसी ने पूछा महाराज आप क्या देख कर हंसे जवाब दिया दुनियां की भूल देख के बोला सो क्या उत्तर दिया । दो० । फूले फूलेफिरत हैं, आज हमारोब्याव । तुलसी गाय बजाय के, देत काठ में पाव ॥

२०६—एक छोटा सा लड़का था । छ बरसका । गोरा [बद]न । देखनेमें ऐसा प्यारा और भोला भाला, कि सबका [जी] चाहे कि उससे कुछ बोलिये । इस लड़केका नाम हीरा-[ला]ल था । उसका बाप छकोड़ी जातका बनियां, भागल पु-[र] [illegible] के महल्ले जोगसर में रहता था । दालचावल की इसके [य]हां दूकान थी एक दिन हीरालाल की मा ने अपने दुलहे

से [illegible] "नन्हा बबुआ [illegible] को गुरूजी के यहां बिठा दो।" छकौड़ी ने कहा, "हां, गुरूजी के यहां जाने से अंगट नहीं होगा।"

दूसरे दिन छकौड़ी हीरालाल को लिये हुए गुरूजी के यहां गये। यह गुरूजी, चट्टू बाज़ार होकर जो राह शुजागंज बाधचूर की ओर गई है, उसी सड़क की बाईं ओर एक बनियें के ओसारे में बैठे लड़कों को पढ़ा रहे थे। लड़के "गर गरहां एकोसा सो, बुरबरहां चउवालसो" चिल्ला रहे थे। गुरूजी एक लांबी छड़ी लिये हुए योंही ज़मीनपर (सुर के लयपर) ठक ठका रहे थे।

हीरालाल गुरूजी की लांबी छड़ी देख कर कांपने लगा। छकौड़ी ने गुरूजी से कह कर हीरालाल की गनेस पूजा करा पिंडेपर बिठला दिया। दो तीन दिन तक तो हीरालाल बहुत लजाया शरमाया, फिर ढारस होनेसे, आप भी और लड़कों की तरह लगा चिल्ला चिल्ला कर पढ़ने। रोज़ घर से जाता और पढ़ कर चला आता। यह लड़का ऐसा जी लगा कर पढ़ता था, कि गुरूजी तो उसे अपने बेटेसे भी बढ़ कर मानने लगे। जो एक दिन भी वह पाठशाले में नहीं जाता, तो गुरूजी घबरा जाते। भले लड़के को सब कोई योंही मानते हैं।

गुरूजी को इतना मानते देख, दो एक लड़कों को हीरालाल से बड़ी डाह हो गई। इन लड़कों में एक बड़ा हीअंगट था। इसका नाम छेदी था। इससे सब लड़के हैरान